नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 100
दि. 11.01.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

सुप्रीम कोर्ट की दहलीज पर बंगाल सरकार और ईडी की टकराहट चुनावी माहौल में जांच एजेंसियों की भूमिका पर छिड़ी बहस

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल में आगामी विधानसभा चुनाव से पहले राजनीतिक तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है और इसी बीच प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी और ममता बनर्जी सरकार के बीच टकराव अब सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गया है। इंडियन पॉलिटिकल एक्शन कमेटी (आई-पैक) के कोलकाता स्थित कार्यालय और उसके निदेशक प्रतीक जैन के आवास पर ईडी की छापेमारी के बाद जो सियासी और कानूनी विवाद खड़ा हुआ, उसने अब संवैधानिक और संघीय ढांचे से जुड़े कई गंभीर सवालों को जन्म दे दिया है। एक ओर राज्य सरकार इसे चुनावी समय में विपक्ष को डराने और रणनीतिक रूप से कमजोर करने की कार्रवाई बता रही है, वहीं दूसरी ओर ईडी का दावा है कि पश्चिम बंगाल सरकार उसकी वैध जांच प्रक्रिया में सीधा हस्तक्षेप कर रही है और एजेंसी के कामकाज में बाधा उत्पन्न की जा रही है।

ईडी ने इस पूरे घटनाक्रम को लेकर सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है और अपनी याचिका में आरोप लगाया है कि गुरुवार को जब एजेंसी ने कोयला तस्करी और मनी लॉन्ड्रिंग से जुड़े मामले में आई-पैक के मुख्यालय और प्रतीक जैन के आवास पर तलाशी अभियान चलाया, तब राज्य सरकार और पुलिस प्रशासन की ओर से असहयोग और रुकावटों का सामना करना पड़ा। एजेंसी का कहना है कि तलाशी के दौरान कानून के तहत उसे जो अधिकार प्राप्त हैं, उनका प्रयोग करने से उसे रोका गया और मौके पर मौजूद पुलिस ने केंद्रीय जांच एजेंसी के काम में बाधा डाली।

ईडी की याचिका में यह भी कहा गया है कि किसी भी राज्य सरकार को यह अधिकार नहीं है कि वह केंद्रीय जांच एजेंसियों की कार्रवाई में हस्तक्षेप करे या उन्हें प्रभावित करने का प्रयास करे। एजेंसी ने सुप्रीम कोर्ट से यह स्पष्ट निर्देश देने की मांग की है कि वह बिना किसी

राजनीतिक दबाव, प्रशासनिक हस्तक्षेप या स्थानीय पुलिस की रुकावट के निष्पक्ष रूप से अपनी जांच पूरी कर सके। ईडी का तर्क है कि यदि जांच एजेंसियों को इस तरह रोका जाएगा तो देश में कानून के शासन और स्वतंत्र जांच की अवधारणा पर गंभीर प्रश्नचिह्न लग जाएगा।

इस पूरे विवाद के बीच पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली सरकार ने भी पहले ही सुप्रीम कोर्ट में कैविएट दाखिल कर दिया है। इस कैविएट के जरिए राज्य सरकार ने अदालत से आग्रह किया है कि यदि इस मामले में कोई भी आदेश पारित किया जाए तो उससे पहले उसका पक्ष अवश्य सुना जाए। कानूनी भाषा में कैविएट का अर्थ यही होता है कि अदालत किसी एक पक्ष की दलील सुनकर एकतरफा फैसला न करे। इससे साफ है कि बंगाल सरकार इस मामले में किसी भी संभावित आदेश को लेकर सतर्क है और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए पूरी तरह तैयार है।

इस विवाद की जड़ उस दिन की छापेमारी से जुड़ी है जब ईडी ने आई-पैक के कोलकाता स्थित दफ्तर और इसके निदेशक प्रतीक जैन के घर पर तलाशी ली। ईडी का दावा है कि तलाशी के दौरान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी स्वयं मौके पर पहुंचीं और एजेंसी के अनुसार, उस समय कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, जो जांच के लिए अहम हो सकते थे, एजेंसी के कब्जे से बाहर ले जाए गए। ईडी ने इसे जांच में गंभीर हस्तक्षेप बताते हुए इसे कानून का उल्लंघन करार दिया है। एजेंसी का कहना है कि यह मामला केवल एक छापेमारी तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे जांच की निष्पक्षता और साक्ष्यों की सुरक्षा पर सीधा असर पड़ता है।

दूसरी ओर, ममता बनर्जी और उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस ने ईडी के आरोपों को सिरे से खारिज किया है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का कहना है कि ईडी ने अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर कार्रवाई की और यह पूरी छापेमारी राजनीतिक मंशा से प्रेरित थी। उनका दावा है कि ईडी अधिकारी सुबह करीब छह बजे वहां पहुंचे थे, जबकि वह स्वयं लगभग पौने बारह बजे मौके पर पहुंचीं। ममता बनर्जी ने आरोप लगाया है कि केंद्रीय एजेंसियों का इस्तेमाल केंद्र सरकार द्वारा विपक्षी दलों को डराने और चुनावी लाभ हासिल करने के लिए किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि ईडी का उद्देश्य भ्रष्टाचार की निष्पक्ष जांच नहीं, बल्कि चुनावी रणनीति और गोपनीय राजनीतिक डेटा तक पहुंच बनाना है। इस मामले ने उस समय और तूल पकड़ लिया जब ईडी और तृणमूल कांग्रेस, दोनों ने एक-दूसरे के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। ईडी ने जहां राज्य सरकार और पुलिस प्रशासन पर जांच में बाधा डालने का आरोप लगाया, वहीं टीएमसी ने ईडी पर अवैध तरीके से काम करने और राजनीतिक साजिश रचने का आरोप लगाया। इतना ही नहीं, ईडी ने कोलकाता उच्च न्यायालय में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ सीबीआई जांच की मांग भी कर दी है। एजेंसी का आरोप है कि मुख्यमंत्री ने पुलिस की मदद से ऐसे साक्ष्यों को हटवाया, जो पहले से एजेंसी के कब्जे में थे।

यह पूरा विवाद अब केवल एक छापेमारी या एक जांच तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह केंद्र और राज्य के बीच शक्तियों के संतुलन, संघीय ढांचे, और जांच एजेंसियों की स्वतंत्रता जैसे बड़े संवैधानिक सवालों को सामने ले आया है। विपक्षी दल इसे लोकतंत्र और संघवाद पर हमला बता रहे हैं, जबकि केंद्र समर्थक दलों का कहना है कि कानून से ऊपर कोई नहीं है और जांच एजेंसियों को अपना काम करने से रोका नहीं जाना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट में यह मामला पहुंचने के बाद अब सभी की निगाहें शीर्ष अदालत पर टिकी हैं। अदालत का रुख यह तय करेगा कि केंद्रीय जांच एजेंसियों और राज्य सरकारों के बीच टकराव की इस बढ़ती प्रवृत्ति पर किस तरह की संवैधानिक सीमा रेखा खींची जाती है। साथ ही, चुनावी माहौल में एजेंसियों की भूमिका और उनकी निष्पक्षता पर चल रही बहस को भी इस मामले से नई दिशा मिलने की संभावना है। बंगाल की राजनीति में यह विवाद आने वाले दिनों में और तेज हो सकता है, क्योंकि यह सिर्फ एक कानूनी लड़ाई नहीं, बल्कि राजनीतिक विश्वास, शक्ति संतुलन और लोकतांत्रिक मर्यादाओं की भी परीक्षा बन चुका है।

हुगली से दक्षिण 24 परगना तक दहशत का साया, नाबालिग से दरिंदगी और फैक्टरी धमाके ने झकझोर दिया बंगाल

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में महिलाओं और नाबालिग लड़कियों की सुरक्षा को लेकर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। हुगली जिले में एक सुनसान पड़ी फैक्टरी के भीतर 16 वर्षीय किशोरी के साथ कथित तौर पर सामूहिक दुष्कर्म की दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। इस मामले ने न सिर्फ कानून-व्यवस्था पर बल्कि राजनीतिक संरक्षण और सामाजिक संवेदनशीलता पर भी बहस तेज कर दी है। पुलिस ने इस मामले में अब तक दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जबकि दो अन्य की तलाश जारी है।

पुलिस के अनुसार यह घटना गुरुवार शाम की है, जब नाबालिग लड़की अपने एक दोस्त के साथ बंद पड़ी हिंदमोटर फैक्टरी परिसर में गई थी। आरोप है कि इसी दौरान कुछ युवकों ने मौके का फायदा उठाते हुए उसे घेर लिया और परिसर के अंदर उसके साथ जबरन शारीरिक दुराचार किया। फैक्टरी लंबे समय से बंद पड़ी है और आसपास सुनसान इलाका होने के कारण वहां किसी की आवाजाही नहीं होती, जिसका फायदा आरोपियों ने उठाया। पीड़िता की शिकायत के आधार पर पुलिस ने तुरंत मामला दर्ज कर जांच शुरू की।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मामले में पॉक्सो एक्ट समेत गंभीर धाराओं

के तहत केस दर्ज किया गया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों से पूछताछ की जा रही है और पूरे घटनाक्रम को हर एंगल से खंगाला जा रहा है। पुलिस का कहना है कि पीड़िता का मेडिकल परीक्षण कराया गया है और आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी की जा रही है। इस मामले में सबसे चौंकाने वाली बात यह सामने आई है कि गिरफ्तार आरोपियों में से एक दीपांकर अधिकारी उर्फ सोनाई है, जो कथित तौर पर इलाके में तृणमूल कांग्रेस का युवा नेता बताया जा रहा है। हालांकि पुलिस की ओर से उसकी राजनीतिक भूमिका को लेकर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया गया है, लेकिन स्थानीय स्तर पर उसे सत्तारूढ़ दल से जुड़ा हुआ बताया जा रहा है। दूसरा गिरफ्तार आरोपी लड़की का कथित प्रेमी बताया जा रहा है, जो खुद भी नाबालिग है। इस तथ्य ने मामले को और जटिल बना दिया है, जिस पर पुलिस और कानूनी एजेंसियां बारीकी से विचार कर रही हैं।

पुलिस ने बताया कि इस वारदात में दो अन्य लोग भी शामिल थे, जो फिलहाल फरार हैं। उनकी तलाश के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है और संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है। पुलिस का दावा है कि जल्द ही फरार आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इलाके में सुरक्षा बढ़ा दी गई है और स्थानीय लोगों से भी पूछताछ की जा रही है ताकि घटना से जुड़े हर पहलू को स्पष्ट किया जा सके।

इस घटना ने राज्य में महिलाओं और बच्चियों की सुरक्षा को लेकर एक बार फिर राजनीतिक और सामाजिक बहस को हवा दे दी है। विपक्षी दलों ने सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस पर तीखे आरोप लगाए हैं और कहा है कि अपराधियों को राजनीतिक संरक्षण मिलने के कारण ऐसे जघन्य अपराध लगातार सामने आ रहे हैं। वहीं सत्तारूढ़ दल की ओर से कहा जा रहा है कि कानून अपना काम कर रहा है और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी, चाहे वे किसी भी पार्टी से जुड़े हों।

इसी बीच बंगाल से एक और गंभीर घटना सामने आई है। दक्षिण 24 परगना जिले के चंपाहाटी इलाके में पटाखा बनाने वाली एक यूनिट में जोरदार धमाका हो गया, जिसमें चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। बारुईपुर पुलिस जिले के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि धमाके के बाद फैक्टरी में आग लग गई, जिसे बुझाने के लिए कई दमकल गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत गंभीर बताई जा रही है। पुलिस के अनुसार धमाके के कारणों का फिलहाल पता नहीं चल पाया है और मामले की जांच शुरू कर दी गई है।

लगातार सामने आ रही इन घटनाओं ने पश्चिम बंगाल में सुरक्षा, कानून-व्यवस्था और प्रशासनिक निगरानी को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा कर दी हैं। एक ओर जहां नाबालिगों के खिलाफ यौन अपराध समाज की संवेदनशीलता को झकझोर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर अवैध या असुरक्षित औद्योगिक गतिविधियां आम लोगों की जान पर बनकर टूट रही हैं। सवाल यह है कि क्या इन घटनाओं से सबक लेकर जमीनी स्तर पर सख्त और प्रभावी कदम उठाए जाएंगे, या फिर ये मामले भी समय के साथ सिर्फ खबरों तक सीमित रह जाएंगे।

कन्नड़ साहित्य जगत को गहरा आघात, लेखिका प्रकाशक आशा रघु का असमय निधन

बेंगलुरु। कन्नड़ साहित्य, रंगमंच और प्रकाशन जगत के लिए शनिवार का दिन बेहद शोकपूर्ण रहा, जब प्रख्यात लेखिका और प्रकाशक आशा रघु का 46 वर्ष की आयु में निधन हो गया। बेंगलुरु के मल्लेश्वरम स्थित उनके आवास पर उनका पार्थिव शरीर मिला। पुलिस के अनुसार यह मामला आत्महत्या का है और प्रारंभिक जांच में इसे अस्वाभाविक मृत्यु के रूप में दर्ज किया गया है। इस खबर के सामने आते ही साहित्यिक जगत में शोक की लहर दौड़ गई और हर कोई इस संवेदनशील, सृजनशील तथा प्रतिभाशाली लेखिका के असमय चले जाने से स्तब्ध रह गया।

आशा रघु का जीवन बाहर से जितना रचनात्मक और उपलब्धियों से भरा दिखता था, भीतर से उतना ही संघर्षपूर्ण भी रहा। दो वर्ष पहले उनके पति केसी रघु के निधन के बाद से वह गहरे अवसाद से जूझ रही थीं। करीबी लोगों के अनुसार, वह अपने काम में खुद को व्यस्त रखने की कोशिश करती रहीं, लेकिन व्यक्तिगत जीवन में आई रिक्तता और मानसिक पीड़ा ने उन्हें भीतर तक तोड़ दिया था। अपने पीछे वह एक बेटी और शोकाकुल परिवार को छोड़ गई हैं, जिनके लिए यह क्षति शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।

18 जून 1979 को जन्मीं आशा रघु ने अपनी शिक्षा बेंगलुरु विश्वविद्यालय से पूरी की थी, जहां से उन्होंने कन्नड़ विषय में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। उनके माता-पिता केशवा अयंगर और सुलोचना ने उन्हें साहित्य और संस्कारों से जोड़ने का कार्य बचपन से ही किया। पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने प्रवक्ता के रूप में अपने करियर की शुरुआत की, लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि उनका वास्तविक झुकाव कक्षा की सीमाओं से कहीं आगे, रचनात्मक अभिव्यक्ति की खुली दुनिया की ओर है। साहित्य, कला और समाज को समझने-परखने की उनकी दृष्टि उन्हें लेखन और सांस्कृतिक गतिविधियों की ओर खींच ले गई।

साहित्य में पूरी तरह समर्पित होने से पहले आशा रघु ने रंगमंच, टेलीविजन और सिनेमा के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने संवाद लेखक के रूप में काम किया और सहायक निर्देशक के तौर पर भी कई प्रोजेक्ट्स से जुड़ी रहीं। इन अनुभवों ने उनके लेखन को एक अलग ही गहराई दी, जहां दृश्यात्मकता, संवादों की तीव्रता और मानवीय भावनाओं की बारीक समझ स्पष्ट दिखाई देती है। बाद के वर्षों में उन्होंने अपना पूरा ध्यान पुस्तक प्रकाशन और गंभीर साहित्य लेखन पर केंद्रित किया, जिससे कन्नड़ साहित्य को एक नई संवेदनशील आवाज मिली।

आशा रघु की साहित्यिक कृतियां उनके भीतर के गहन चिंतन और समाज के प्रति उनके प्रश्नों को उजागर करती हैं। उनके उपन्यास 'आवर्ता', 'गाता', 'माये' और 'चित्तरंगा' ने पाठकों के बीच विशेष पहचान बनाई। इन रचनाओं में स्त्री मन की जटिलताओं, सामाजिक संरचनाओं, रिश्तों की परतों और अस्तित्व के प्रश्नों को बेहद सशक्त ढंग से उकेरा गया है। उनकी कहानियां जैसे 'आराने बेरालू' और 'अपरूपा पुराण काथेगलु' आम जीवन की घटनाओं को असाधारण संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं। नाटक लेखन में भी 'चूड़ामणि' और 'क्षमादान' जैसी कृतियों ने रंगमंच प्रेमियों और समीक्षकों का ध्यान आकर्षित किया।

एक लेखिका होने के साथ-साथ आशा रघु एक प्रतिबद्ध प्रकाशक भी थीं। उन्होंने कन्नड़ साहित्य के नए और गंभीर लेखकों को मंच देने का प्रयास किया और व्यावसायिक दबावों से हटकर गुणवत्तापूर्ण साहित्य के प्रकाशन को प्राथमिकता दी। उनके इस योगदान को साहित्यिक जगत हमेशा सम्मान के साथ याद करेगा। लेखन और प्रकाशन के माध्यम से उन्होंने केवल किताबें नहीं रचीं, बल्कि विचारों, संवादों और बहसों के लिए भी स्थान तैयार किया।

उनकी साहित्यिक साधना और उत्कृष्ट लेखन के लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया। कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार, सूर्यनारायण चाडगा पुरस्कार और कन्नड़ साहित्य परिषद के विभिन्न सम्मान उनके लेखन की गंभीरता और व्यापक स्वीकार्यता का प्रमाण हैं। इसके अतिरिक्त 'साहित्यामृत सरस्वती' और 'अम्मा पुरस्कार' जैसे सम्मानों ने उन्हें क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर एक सशक्त साहित्यिक व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया।

ठिठुरते उत्तर भारत में फिलहाल नहीं मिलेगी राहत, शीतलहर और कोहरे ने थामा सर्दी का शिकंजा

नई दिल्ली/जयपुर/श्रीनगर/चंडीगढ़। उत्तर और उत्तर-पश्चिम भारत इस समय भीषण सर्दी, शीतलहर और घने कोहरे की गिरफ्त में है और मौसम विभाग के संकेत बताते हैं कि फिलहाल लोगों को इससे राहत मिलने वाली नहीं है। पहाड़ से लेकर मैदान तक ठंड का असर साफ दिखाई दे रहा है। पर्वतीय राज्यों में तापमान शून्य से नीचे बना हुआ है तो वहीं मैदानी इलाकों में शीत दिवस, घना कोहरा और ठंडी हवाओं ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रखा है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार 17 जनवरी तक उत्तर और पश्चिम भारत के अधिकांश हिस्सों में शीतलहर और कोहरे का यह दौर जारी रह सकता है।

पिछले कुछ दिनों से लगातार सक्रिय उत्तर-पश्चिमी हवाओं ने ठंड को और तीखा बना दिया है। बिहार और राजस्थान सहित कई राज्यों में शनिवार को शीत दिवस जैसी स्थिति बनी रही। हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, झारखंड, ओडिशा और उत्तरी आंतरिक कर्नाटक में ठंड इतनी तेज रही कि लोग दिन में भी अलाव और गर्म कपड़ों के सहारे नजर आए। उत्तराखंड के कई इलाकों में पाला पड़ने की स्थिति दर्ज की गई, जिससे फसलों और आम जनजीवन पर असर पड़ने की आशंका बढ़ गई है।

राजस्थान में हालात लगातार सख्त बने हुए हैं। राज्य के कई हिस्सों में मध्यम से घना कोहरा छाया रहा और शीतलहर के कारण सामान्य गतिविधियां प्रभावित हुईं। सुबह के समय दृश्यता बेहद कम रही, जिससे सड़कों पर वाहन रेंगते नजर आए। दिल्ली-एनसीआर में शनिवार को दोपहर बाद धूप निकलने से थोड़ी राहत जरूर मिली, लेकिन ठंडी हवाओं के चलते सर्दी का असर बना रहा। शाम ढलते ही एक बार फिर ठिठुरन बढ़ गई और लोग घरों में दुबकने को मजबूर हो गए।

जम्मू-कश्मीर में सर्दी अपने चरम पर है। पूरी घाटी जबरदस्त ठंड की चपेट में है और डल झील समेत कई जलस्रोत जम चुके हैं। अधिकारियों के अनुसार गुलमर्ग में न्यूनतम तापमान माइनस 6.8 डिग्री, सोनमर्ग में माइनस 6.3, काजीगुंड में माइनस 6.3, कुपवाड़ा में माइनस 6.1 और कोकरनाग में माइनस 4.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हैरानी की बात यह है कि घाटी के मैदानी इलाकों में इस मौसम में अब तक बर्फबारी नहीं हुई है, लेकिन ठंड अपने पूरे तेवर में है। मौसम विभाग का अनुमान है कि 21 जनवरी तक मौसम शुष्क रहेगा, हालांकि बादल छाए रह सकते हैं।

पंजाब और हरियाणा में भी सर्दी ने रिकॉर्ड तोड़ असर दिखाया है। पंजाब के होशियारपुर में पारा गिरकर 1.1 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जबकि अमृतसर में 1.3, बठिंडा में 3.4, फरीदकोट में 3.2, पटियाला में 4.4 और गुरदासपुर में 3.2 डिग्री न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया। हरियाणा में नारनौल में तापमान 3.5, हिसार में 4, करनाल में 4.4 और भिवानी में 4.5 डिग्री सेल्सियस रहा, जिससे ठंड का असर साफ झलकता है।

मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि रविवार को पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, चंडीगढ़, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम में शीत दिवस जैसी स्थिति बनी रह सकती है। बिहार में 14 जनवरी तक शीत दिवस का दौर जारी रहने की संभावना है। इसके अलावा 12 और 13 जनवरी को राजस्थान में, 14 जनवरी तक हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली में तथा 12 जनवरी को उत्तराखंड, झारखंड और उत्तरी आंतरिक कर्नाटक में शीतलहर का असर बना रह सकता है।

तमिलनाडु की सियासत में फंसा भाजपा का गणित, अन्नाद्रमुक की अंदरूनी खींचतान से गठबंधन पर संकट

चेन्नई। तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति की मजबूत दीवार को भेदने की कोशिश कर रही भारतीय जनता पार्टी के लिए राह आसान नजर नहीं आ रही है। राज्य में सत्ता परिवर्तन का सपना देख रही भाजपा को अपने सबसे अहम संभावित सहयोगी अन्नाद्रमुक के भीतर जारी गहरे आंतरिक मतभेदों से बड़ा झटका लग सकता है। अन्नाद्रमुक के मौजूदा सर्वमान्य नेता ई. पलानीस्वामी का कड़ा रुख भाजपा की उस रणनीति पर पानी फेरता दिखाई दे रहा है, जिसके तहत पार्टी राज्य में एक मजबूत और एकजुट विपक्षी मोर्चा खड़ा करना चाहती है।

भाजपा की योजना स्पष्ट है कि तमिलनाडु में द्रमुक-कांग्रेस गठबंधन को टक्कर देने के लिए अन्नाद्रमुक के सभी धड़ों को एक मंच पर लाया जाए। इसमें ओ. पनीरसेल्वम और शशिकला गुट की वापसी को भाजपा जरूरी मान रही है, ताकि एआईएडीएमके का पारंपरिक वोट बैंक बिखरने से बचाया जा सके। लेकिन पलानीस्वामी किसी भी हाल में पुराने विवादों को भुलाकर इन धड़ों को साथ लेने को तैयार नहीं दिख रहे हैं। उनका मानना है कि पार्टी को फिर से उन्हीं चेहरों के साथ जोड़ना, जिनसे अतीत में नुकसान हुआ, राजनीतिक रूप से आत्मघाती कदम हो सकता है। यही सख्ती भाजपा के लिए सबसे बड़ी परेशानी बनती जा रही है।

इस अंदरूनी कलह के बीच सीटों के बंटवारे का मुद्दा भी गठबंधन की राह में बड़ा रोड़ा बनकर खड़ा है। भाजपा ने 234 सदस्यीय तमिलनाडु विधानसभा में अपने लिए करीब 70 सीटों की मांग रखी है, जिसे वह राज्य में अपनी बढ़ती राजनीतिक उपस्थिति के लिहाज से जरूरी मानती है। वहीं अन्नाद्रमुक का रुख बिल्कुल अलग है। पार्टी का दावा है कि वह खुद कम से कम 170 सीटों पर चुनाव लड़ना चाहती है, ताकि मुख्य मुकाबला द्रमुक से सीधे-सीधे हो सके। यदि अन्नाद्रमुक की यह मांग मानी जाती है, तो गठबंधन में भाजपा और अन्य सहयोगी दलों के लिए महज 64 सीटें ही बचेंगी, जो भाजपा की रणनीति को कमजोर कर सकती हैं।

इस सीमित सीट गणित में पीएमके जैसी पार्टियों की भूमिका भी अहम हो जाती है। अंबुमणि रामदास और ए. रामदास के नेतृत्व वाली पीएमके को करीब 16 सीटें देने का फॉर्मूला सामने आ रहा है। ऐसे में भाजपा के हिस्से में और भी कम सीटें बचती हैं। इसी कारण भाजपा एक वैकल्पिक रास्ते पर भी विचार कर रही है, जिसके तहत वह अपने हिस्से की कुछ सीटें अन्नाद्रमुक से अलग हुए पनीरसेल्वम और शशिकला गुट को दे सकती है, ताकि विपक्षी वोटों का बंटवारा रोका जा सके। लेकिन इस फार्मूले की सबसे बड़ी बाधा फिर वही है—पलानीस्वामी की सहमति, जो फिलहाल दूर-दूर तक नजर नहीं आ रही है।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए भाजपा आलाकमान खुद तमिलनाडु के सियासी रण में सक्रिय हो गया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल इस पूरे समीकरण को सुलझाने की जिम्मेदारी अपने हाथों में लिए हुए हैं। हाल ही में अमित शाह और ई. पलानीस्वामी के बीच हुई मुलाकात को बेहद अहम माना जा रहा है, जिसमें गठबंधन को मजबूत बनाने और सीटों के समझौते पर विस्तार से चर्चा हुई। हालांकि, इस बैठक के बाद भी कोई ठोस समाधान सामने नहीं आया है, जिससे यह साफ है कि मतभेद अभी भी गहरे हैं।

संगठनात्मक स्तर पर भी भाजपा ने कमर कस ली है। पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष नितिन नवीन ने तमिलनाडु का दौरा शुरू कर दिया है और बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत करने में जुटे हैं।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

इंदौर से सबक ले रोहतक को राहत दें

यह विडंबना ही है कि हमारे नागरिक प्रशासन का नियामक तंत्र आग लगने पर कुआं खोदने की मानसिकता से मुक्त नहीं होता। यदि समय रहते संवेदनशील या फिर घातक साबित होने वाली स्थिति व परिस्थिति पर नजर रखी जाए तो जनधन की हानि टाली भी जा सकती है। हाल ही में दूषित पेयजल से इंदौर में हुई जन हानि के बाद रोहतक और झज्जर की उन चेतावनियों की अनदेखी नहीं की जा सकती,जिसमें नागरिक घरों में आने वाले गंदे व बदबूदार पानी की शिकायत करते रहे हैं। निश्चय ही इस स्थिति को जन स्वास्थ्य से जुड़े आपातकाल के रूप में देखा जाना चाहिए। इसके साथ ही नागरिकों की शिकायत की जांच-पड़ताल कर अविलंब कार्रवाई भी होनी चाहिए। लेकिन इसके बावजूद जवाबदेही न निभाने और एक-दूसरे विभाग पर दोष मढ़ने का पुराना सिलसिला ही अकसर सामने आता है। उल्लेखनीय है कि इंदौर की हालिया दूषित पेयजल की त्रासदी में नगरपालिका द्वारा सप्लाई किए जा रहे पानी के सेवन से कई लोगों की जान चली गई और बड़ी संख्या में लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। विडंबना यह है कि वहां भी नागरिकों की शुरुआती चेतावनियों को सामान्य शिकायतों के रूप में देखकर खारिज कर दिया गया था। लेकिन एक दर्जन से अधिक लोगों की मौत के बाद अधिकारियों ने स्वीकार किया कि इंदौर में पेयजल पाइपलाइनों में सीवेज का रिसाव हुआ था। यह स्वीकारोक्ति भी तब सामने आई जब बड़ा नुकसान हो चुका था। लगता है कि रोहतक व झज्जर भी इसी तरह के आसन्न खतरे के मुहाने पर खड़े हैं। वैसे देखा जाए तो देश के विभिन्न हिस्सों में सामने आने वाले ऐसे मामले न तो रहस्यमय हैं और न ही ये कोई नई बात ही है। बुनियादी ढांचागत व्यवस्था का जर्जर होना, सीवर लाइनों में रिसाव, अनियोजित शहरी विस्तार और नागरिक एजेंसियों के बीच आवश्यक समन्वय का अभाव, अकसर ऐसी स्थिति पैदा कर देता है, जहां सीवेज और पीने का पानी खतरनाक रूप से एक-दूसरे के करीब आ जाते हैं। गाहे-बगाहे देश के विभिन्न भागों में स्थानीय नागरिक जब-तब आरोप लगाते हैं कि पीने के पानी में सीवर का पानी मिलने की आशंका है। ऐसे में शासन-प्रशासन की पहली प्रतिक्रिया, इसके सत्यापन, पाइप लाइन की मरम्मत और वैकल्पिक पेयजल उपलब्ध कराने की होनी चाहिए। ऐसे में स्वास्थ्य संकट को दूर करने और अपनी बात मनवाने के लिये यदि नागरिकों को सड़कों पर उतरना पड़ता है तो यह शासन-प्रशासन की विफलता को ही दर्शाता है। विडंबना यह है कि जल प्रदूषण का सबसे बुरा असर समाज के कमजोर वर्ग पर ही पड़ता है। ऐसे में बच्चे, बुजुर्ग और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग इसकी चपेट में आते हैं। निर्विवाद रूप से दूषित जल से डायरिया, हेपेटाइटिस और अन्य दूषित जल जनित बीमारियों का प्रभाव तेजी से फैलता है। जिसके चलते अफरा-तफरी के बीच अक्सर स्थानीय स्वास्थ्य व्यवस्था चरमरा जाती है। ऐसे में तंत्र की निष्क्रियता की कीमत आम लोगों को न केवल अस्पताल के भारी-भरकम बिलों के रूप में, बल्कि जानमाल के नुकसान और प्रशासन के प्रति जनता के विश्वास में आई कमी के रूप में भी चुकानी पड़ती है। निश्चित रूप से दूषित पाइपलाइनों को तुरंत बंद किया जाना चाहिए। व्यापक स्तर पर प्रभावित क्षेत्र में जल स्रोतों का परीक्षण होना चाहिए। साथ ही यह भी जरूरी है कि प्रभावित क्षेत्र में व्यापक स्तर पर लिए गए पानी के नमूनों की जांच के परिणाम भी सार्वजनिक किए जाएं। इसके अलावा आवश्यक है कि दूषित सिस्टम के सुरक्षित प्रमाणित होने तक सुरक्षित वैकल्पिक जल आपूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जिम्मेदारी तय की जाए, न कि बांटी जानी चाहिए। सही मायनों में शहरी प्रशासन की कुशलता को स्वच्छ जल, स्वच्छता और जन-सुरक्षा जैसी बुनियादी बातों के मूल्यांकन के आधार पर मापा जाना चाहिए। ऐसे में इंदौर के घटनाक्रम को एक चेतावनी मानते हुए रोहतक और झज्जर के मामले में तत्काल कार्रवाई करने की जरूरत है।

NCP की दरार खत्म ! पवार परिवार की चाल से महाराष्ट्र की राजनीति में आया नया मोड़

> घोषणापत्र जारी करने के मौके पर दोनों गुटों के नेताओं का एक साथ मंच साझा करना अपने आप में असाधारण दृश्य रहा। अजित पवार ने इस दौरान कहा कि परिवारिक तनाव समाप्त हो चुके हैं और दोनों पक्षों के कार्यकर्ता चाहते हैं कि पार्टी फिर से एकजुट हो।

महाराष्ट्र की राजनीति में लंबे समय से चली आ रही राकांपा की पारिवारिक और राजनीतिक फूट पर फिलहाल विराम के संकेत मिलते दिख रहे हैं। दरअसल, पुणे और पिंपरी चिंचवड नगर निगम चुनावों को ध्यान में रखते हुए राकांपा के दोनों गुटों ने संयुक्त घोषणापत्र जारी किया है। यह वही राकांपा है जो बीते डेढ़ वर्ष से दो हिस्सों में बंटी हुई थी और एक दूसरे के खिलाफ आक्रामक राजनीति कर रही थी। संयुक्त घोषणापत्र में गड्ढा मुक्त सड़कें, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, नागरिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करना, जल आपूर्ति, सफाई व्यवस्था और सार्वजनिक परिवहन जैसे मुद्दों को प्राथमिकता दी गई है। यह घोषणापत्र स्थानीय मुद्दों पर केंद्रित है लेकिन इसका राजनीतिक संदेश दूर तक जाता है।घोषणापत्र जारी करने के मौके पर दोनों गुटों के नेताओं का एक साथ मंच साझा करना अपने आप में असाधारण दृश्य रहा। अजित पवार ने इस दौरान कहा कि परिवारिक तनाव समाप्त हो चुके हैं और दोनों पक्षों के कार्यकर्ता चाहते हैं कि पार्टी फिर से एकजुट हो। उन्होंने संकेत दिया कि फिलहाल नगर निगम चुनावों में साथ आने का निर्णय लिया गया है लेकिन भविष्य में राजनीतिक एकता की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। शरद पवार गुट की ओर से भी बयानबाजी का स्वर बदला हुआ नजर आया। तल्खी की जगह संयम और आक्रामकता की जगह राजनीतिक परिपक्वता दिखाई दी। इससे यह स्पष्ट हो गया कि यह केवल स्थानीय तालमेल नहीं बल्कि सोची समझी राजनीतिक रणनीति का हिस्सा है।

इस घटनाक्रम ने न केवल महाराष्ट्र बल्कि राष्ट्रीय राजनीति में भी चर्चाओं का बाजार गर्म कर दिया है। क्योंकि राकांपा का एक गुट सत्तारुढ़ गठबंधन एनडीए में है जबकि दूसरा गुट विपक्षी गठबंधन इंडिया का हिस्सा माना जाता है। ऐसे में दोनों का साथ आना राजनीतिक समीकरणों को हिलाने वाला कदम है। देखा जाये तो महाराष्ट्र की राजनीति एक बार फिर यह साबित कर रही है कि यहां विचारधारा नहीं बल्कि सत्ता ही अंतिम सत्य है। राकांपा का विभाजन किसी वैचारिक मतभेद का परिणाम नहीं था बल्कि सत्ता के समीकरणों की उपज था। अब दोनों गुटों का एक मंच पर आना भी किसी आत्ममंथन का नहीं बल्कि सत्ता की मजबूरी का नतीजा है। संयुक्त घोषणापत्र स्थानीय विकास के नाम पर जारी किया गया है लेकिन इसका असली मकसद कार्यकर्ताओं को यह संकेत देना है कि पवार परिवार की सियासी दरार भर रही है। यह संदेश जितना नीचे तक जाएगा, उतना ही तेजी से राजनीतिक गणित बदलेगा। यदि राकांपा के दोनों गुट पूरी तरह से एक हो जाते हैं तो इसका पहला और सीधा असर महाराष्ट्र की राजनीति पर पड़ेगा। अजित पवार का एनडीए के साथ रहना तब अर्थहीन हो जाएगा जब पार्टी की कमान फिर से एकजुट होकर शरद पवार के प्रभाव क्षेत्र में लौटेगी। विपक्षी गठबंधन इंडिया के लिए यह घटनाक्रम जीवनदान जैसा हो सकता है। महाराष्ट्र जैसे निर्णायक राज्य में यदि राकांपा एकजुट होकर विपक्षी खेमे में मजबूती से खड़ी होती है तो यह न केवल विधानसभा बल्कि लोकसभा स्तर पर भी भाजपा के लिए गंभीर चुनौती बन सकती है। विपक्ष की सबसे बड़ी कमजोरी बिखराव रही है और पवारों का साथ आना इस कमजोरी पर मरहम बन सकता है। हालांकि अजित पवार पार्टी की कमान चाचा शरद पवार को वापस सौंपेंगे इसकी संभावना नगण्य ही है।

लेकिन यह तस्वीर का एक ही पहलू है। दूसरा पहलू उतना ही खतरनाक है। यदि राकांपा की एकता केवल नगर निगम और सीमित राजनीतिक सौदे तक सिमटी रहती है तो इससे विपक्षी गठबंधन इंडिया की विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचेगा। जनता पहले ही अवसरवादी राजनीति से त्रस्त है और ऐसे प्रयोग उस अविश्वास को और गहरा करेंगे। एनडीए के लिए यह स्थिति असहज करने वाली है। जिस अजित पवार को सत्ता संतुलन के लिए साथ लिया गया था वही यदि परिवारिक एकता के नाम पर अलग दिशा में चले जाते हैं तो यह गठबंधन की कमजोरी उजागर करेगा। यह संदेश जाएगा कि सत्ता के लिए बनाए गए गठबंधन टिकाऊ नहीं होते।

बहरहाल, राकांपा का यह संयुक्त कदम महाराष्ट्र की राजनीति में एक नए अध्याय की शुरुआत है। यह अध्याय एकता, विश्वास और स्थायित्व की ओर जाएगा या फिर अवसरवाद और अस्थायी समझौतों की कहानी बनेगा, यह आने वाले चुनाव तय करेंगे। लेकिन इतना तय है कि पवार परिवार की हर चाल पूरे राजनीतिक शतरंज को हिला देने की ताकत रखती है।

प्रेरणा

चकोतरा कैसे बन सकता है किसानों की लंबी अवधि की कमाई का आधार

भारतीय खेती आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहां सिर्फ ज्यादा उत्पादन ही सफलता की गारंटी नहीं रह गया है। बढ़ती लागत, मौसम की अनिश्चितता, बाजार की अस्थिरता और बदलती उपभोक्ता पसंद ने किसानों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि क्या वे ऐसी फसलों की ओर बढ़ें जो कम जोखिम में स्थायी आमदनी दे सकें। इसी तलाश में कुछ ऐसे फलदार पेड़ सामने आते हैं, जो भले ही बहुत लोकप्रिय न हों, लेकिन सही रणनीति के साथ किसानों के लिए मजबूत आर्थिक सहारा बन सकते हैं। चकोतरा ऐसा ही एक फल है, जिसे देश के अलग-अलग हिस्सों में चकौतरा, चकोत्रा या पोमेलो के नाम से जाना जाता है। यह नींबू वर्ग का बड़ा, सुगंधित और पोषण से भरपूर फल है, जो धीरे-धीरे लेकिन लंबे समय तक किसान को लाभ देता है।

चकोतरा का वैज्ञानिक नाम सिट्रस मैक्सिमा है और यह रुटासी परिवार का सदाबहार वृक्ष है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यह एक बार स्थापित हो जाने के बाद 30 से 40 वर्षों तक लगातार फल देने की क्षमता रखता है। आमतौर पर यह पेड़ 5 से 10 मीटर तक ऊंचा हो जाता है और इसका फैलाव भी अच्छा होता है। खेती के नजरिए से यह गुण बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका मतलब है कि एक बार सही ढंग से लगाया गया चकोतरा का बाग दशकों तक किसान के लिए आय का स्रोत बना रह सकता है। यही कारण है कि इसे अल्पकालिक मुनाफे की बजाय दीर्घकालिक निवेश की तरह देखा जाता है।

चकोतरा के फल का आकार और वजन इसे बाजार में अलग पहचान देता है। सामान्य तौर पर एक फल का वजन एक से तीन किलो तक होता है। इसका छिलका मोटा, स्पंजी और मजबूत होता है, जो फल को लंबे समय तक सुरक्षित रखने में मदद करता है। अंदर का गूदा सफेद, हल्का गुलाबी या लाल रंग का हो सकता है। स्वाद की बात करें तो कच्चा चकोतरा काफी खट्टा होता है, लेकिन पकने पर इसकी खट्टास काफी संतुलित हो जाती है और हल्की मिठास उभर आती है। यही वजह है कि यह फल केवल खाने तक सीमित नहीं है, बल्कि जूस, सलाद और औषधीय उपयोगों में भी तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

चकोतरा की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी का चयन अपेक्षाकृत आसान है। यह उष्ण और उपोष्ण जलवायु में अच्छी तरह पनपता है। 20 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान इसके लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। हल्की ठंड यह सहन कर लेता है, लेकिन ज्यादा पाला या बर्फबारी वाले क्षेत्रों में इसका विकास प्रभावित होता है। मिट्टी के मामले में दोमट या बलुई दोमट मिट्टी, जिसमें जलनिकास अच्छा हो, चकोतरा के लिए आदर्श मानी जाती है। मिट्टी का पीएच मान 5.5 से 7.5 के बीच रहे तो पेड़ स्वस्थ रहता है और फलन अच्छा होता है।

भारत में चकोतरा कोई नई फसल नहीं है। पूर्वोत्तर भारत के राज्यों जैसे असम, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, मणिपुर और नागालैंड में यह लंबे समय से उगाया जाता रहा है। इसके अलावा पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में भी इसके पेड़ पारंपरिक रूप से पाए जाते हैं। हाल के वर्षों में नई किस्मों और बेहतर कृषि तकनीकों के चलते पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में भी इसके सफल प्रयोग देखने को मिले हैं, खासकर उन इलाकों में जहां पाले की समस्या कम है। इससे यह साफ हो गया है कि सही किस्म और देखभाल के साथ चकोतरा की खेती देश के बड़े हिस्से में संभव है। चकोतरा की खेती से वास्तविक आर्थिक लाभ तभी मिलता है जब किसान इसे अकेली फसल की तरह नहीं, बल्कि मिश्रित बागवानी के मॉडल के तहत अपनाता है। शुरुआती चार-पांच वर्षों में जब पेड़ फल देना शुरू नहीं करता, तब उसके बीच दूसरी फसलें उगाकर किसान अपनी आय बनाए रख सकता है। यही वजह है कि पूर्वोत्तर भारत, तटीय ओडिशा, आंध्र प्रदेश, केरल और महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में यह मॉडल काफी सफल साबित हुआ है। अब उत्तर भारत के गर्म और पालारहित इलाकों में भी किसान इसी सोच के साथ चकोतरा की ओर बढ़ रहे हैं।

रोपण के लगभग चार से पांच साल बाद चकोतरा के पेड़ में नियमित फल आना शुरू हो जाता है। एक परिपक्व पेड़ से हर साल 75 से 100 फल आसानी से मिल जाते हैं। जब एक फल का औसत वजन 1.5 से 2.5 किलो तक होता है, तो एक पेड़ से सालाना 100 से 200 किलो तक उत्पादन संभव हो जाता है। अगर स्थानीय बाजार में चकोतरा 60 से 80 रुपये प्रति किलो के भाव से बिकता है, तो एक एकड़ में इसकी खेती किसान को सारे खर्च निकालने के बाद भी 70 से 80 हजार रुपये तक की शुद्ध आमदनी दे सकती है।

लेकिन चकोतरा की असली ताकत तब सामने आती है, जब किसान पारंपरिक बिक्री से आगे सोचता है। ऑर्गेनिक खेती की बढ़ती मांग ने चकोतरा के बाजार को नई दिशा दी है। ऑर्गेनिक तरीके से उगाया गया चकोतरा आज 150 से 200 रुपये प्रति किलो तक बिक रहा है। इसका मतलब है कि वही उत्पादन तीन से चार गुना ज्यादा आमदनी दे सकता है। इसके अलावा अगर किसान प्रोसेसिंग और वैल्यू एडिशन को भी अपनाए, तो मुनाफा और बढ़ सकता है।

चकोतरा का जूस आज हेल्थ ड्रिंक के रूप में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इसके मोटे छिलके से बनने वाला कैंडिड पील, जैम और मुरब्बा बाजार में अच्छी कीमत पाते हैं। इसके छिलके से निकलने वाला तेल कॉस्मेटिक और सुगंध उद्योग में इस्तेमाल होता है, जहां इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। आयुर्वेद और घरेलू उपचारों में भी चकोतरा का विशेष स्थान है, जिससे इसका बाजार केवल फल मंडी तक सीमित नहीं रहता। प्रोसेसिंग के जरिए यही चकोतरा 250 से 300 रुपये प्रति किलो या प्रति लीटर तक की कीमत दिला सकता है।

संस्कृति और तकनीक के बीच सेतु बनी हिंदी

हिन्दी केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि भारत की सभ्यता, संस्कृति और चेतना की एक जीवंत धारा है, जो इस देश की आत्मा को स्वर देती आई है। आज जब विश्व तकनीकी बदलावों के दौर से गुजर रहा है, हिन्दी भी खुद को नए संदर्भों में पुनः परिभाषित कर रही है। पहले केवल कविता, कथा और संवाद की भाषा मानी जाने वाली हिन्दी अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, विज्ञान, डिजिटल नवाचार और वैश्विक संवाद की प्रभावशाली भाषा बनती जा रही है।

विश्व हिन्दी दिवस 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में हुए पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन की ऐतिहासिक घटना की याद दिलाता है, जिसने हिन्दी को राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर निकालकर वैश्विक मंच पर स्थापित किया। इस सम्मेलन के बाद, विभिन्न देशों में आयोजित अन्य विश्व हिन्दी सम्मेलनों ने यह सिद्ध किया कि हिन्दी अब केवल भारत की भाषा नहीं, बल्कि यह विश्वभर में सांस्कृतिक पहचान और संवाद का प्रभावी माध्यम बन चुकी है। आज, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका जैसे देशों में हिन्दी बोलने वाले समुदाय न केवल हिन्दी साहित्य से जुड़े हैं, बल्कि तकनीकी क्षेत्र में भी हिन्दी के उपयोग को बढ़ावा दे रहे हैं।

इक्कीसवीं सदी का सबसे बड़ा परिवर्तन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस है। यह वह तकनीक है, जिसने मानव और मशीन के संबंधों को नई परिभाषा दी है। एआई अब केवल गणना करने वाली मशीन नहीं, बल्कि भाषा समझने, संवाद करने, निर्णय लेने और रचनात्मक कार्यों में भागीदारी निभाने वाली प्रणाली बन चुका है। बीते कुछ वर्षों में हिन्दी ने इसमें सशक्त प्रवेश किया है।

आज वैश्विक तकनीकी कंपनियां हिन्दी को गंभीरता से अपना रही हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित चैटबॉट्स, वॉयस असिस्टेंट्स, ट्रांसलेशन टूल्स और कंटेंट जनरेशन प्लेटफॉर्म्स हिन्दी में संवाद करने लगे हैं। हिन्दी में प्रश्न पूछने पर हिन्दी में ही सटीक, संदर्भपूर्ण और सहज उत्तर मिलना अब असंभव नहीं रहा। यह केवल भाषा का अनुवाद नहीं, बल्कि भाषा की समझ का विकास है। मशीनें अब हिन्दी के व्याकरण, भाव, मुहावरों और यहां तक कि क्षेत्रीय लहजों को भी पहचानने लगी हैं। इससे तकनीक और आम नागरिक के बीच की दूरी कम हो रही है।

हिन्दीभाषी समाज, अब डिजिटल अर्थव्यवस्था का सक्रिय भागीदार बन रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, बैंकिंग, प्रशासन और ई-गवर्नेंस जैसे क्षेत्रों में हिन्दी आधारित एआई टूल्स आम लोगों के जीवन को सरल बना रहे हैं। ऑनलाइन फॉर्म भरने से लेकर सरकारी योजनाओं की जानकारी, टेलीमेडिसिन से लेकर डिजिटल भुगतान तक, हिन्दी तकनीक का माध्यम बन रही है। यह परिवर्तन सामाजिक न्याय और समान अवसरों की दिशा में भी महत्वपूर्ण है।

विज्ञान और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी हिन्दी का दायरा तेजी से बढ़ रहा है। नई शिक्षा नीति ने मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा को प्राथमिकता देकर इस बदलाव को गति दी है। आज इंजीनियरिंग, चिकित्सा, कानून, प्रबंधन और विज्ञान जैसे विषयों की अध्ययन सामग्री हिन्दी में उपलब्ध कराई जा रही है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिन्दी में विज्ञान और तकनीक से जुड़े पाठ्यक्रम, वीडियो लेक्चर और अध्ययन सामग्री छात्रों के लिए नए अवसर खोल रहे हैं।

शोध और नवाचार के क्षेत्र में विश्वविद्यालयों में हिन्दी माध्यम को प्रोत्साहन मिल रहा है। विज्ञान, पर्यावरण, तकनीक, सामाजिक अध्ययन और डेटा विश्लेषण जैसे विषयों पर हिन्दी में शोध कार्य सामने आ रहे हैं। यह ज्ञान के लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया है। हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली का विकास, तकनीकी शब्दों का मानकीकरण और शोध प्रकाशनों का विस्तार इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। हिन्दी की भूमिका डिजिटल मीडिया और तकनीकी पत्रकारिता में भी अभूतपूर्व रूप से बढ़ी है।

आज तकनीक, विज्ञान, अंतरिक्ष, पर्यावरण और स्वास्थ्य से जुड़े विषय हिन्दी में व्यापक रूप से उपलब्ध हैं। हिन्दी में तकनीकी विश्लेषण, एआई टूल्स की जानकारी, साइबर सुरक्षा, डेटा प्राइवेसी और डिजिटल साक्षरता पर सामग्री आम जनता को जागरूक बना रही है। सोशल मीडिया, यूट्यूब, ब्लॉग्स और पॉडकास्ट के माध्यम से हिन्दी तकनीकी ज्ञान का प्रमुख माध्यम बन रही है। इससे लोगों में प्रयोग और नवाचार की भावना बढ़ रही है। व्यवसाय और स्टार्टअप जगत में भी हिन्दी का महत्व बढ़ा है। अब कंपनियां हिन्दी में ग्राहक सेवा, प्रशिक्षण सामग्री और डिजिटल इंटरफेस उपलब्ध करा रही हैं। एआई आधारित हिन्दी चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट्स ग्राहक अनुभव को बेहतर बना रहे हैं। छोटे शहरों और कस्बों से उभरते स्टार्टअप्स हिन्दी को अपनी कार्यभाषा बनाकर नवाचार कर रहे हैं। इससे स्थानीय समस्याओं के स्थानीय समाधान सामने आ रहे हैं।

आने वाले समय में भारत में विकसित होने वाले एआई मॉडल्स हिन्दी को केवल सपोर्टेड भाषा नहीं, बल्कि मूल भाषा के रूप में अपनाएंगे। हिन्दी की संरचना, उसकी भावनात्मक गहराई और सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप तकनीकी समाधान विकसित होंगे। जब हिन्दी में सोचकर कोड लिखा जाएगा, जब हिन्दी में शोध और नवाचार होंगे, तब हिन्दी केवल संवाद की नहीं, बल्कि समाधान की भाषा बन जाएगी। हिन्दी आज उस मोड़ पर खड़ी है, जहां वह परंपरा और आधुनिकता, संस्कृति और तकनीक, भावना और विज्ञान के बीच सेतु बन रही है।

अभियान

विद्या, बुद्धि और करियर की बाधाएं दूर करने वाली साधना: मां सरस्वती की उपासना और मंत्रों का गूढ़

भारतीय सनातन परंपरा में मां सरस्वती को ज्ञान, विद्या, बुद्धि, वाणी और रचनात्मक शक्ति की देवी माना गया है। कहा जाता है कि जहां लक्ष्मी धन देती हैं और दुर्गा शक्ति प्रदान करती हैं, वहीं सरस्वती जीवन को दिशा देती हैं। जिन पर मां सरस्वती की कृपा होती है, उनके जीवन में अज्ञान, भ्रम और असमंजस धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। शिक्षा हो, प्रतियोगी परीक्षा हो, करियर में उन्नति हो, लेखन, संगीत, कला या शोध का क्षेत्र हो—हर जगह मां सरस्वती की साधना को अत्यंत प्रभावशाली माना गया है। यह केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं है, बल्कि मानसिक एकाग्रता, स्मरण शक्ति और आत्मविश्वास से भी इसका गहरा संबंध है।

मां सरस्वती का स्वरूप अत्यंत सात्विक और शांत माना गया है। वे श्वेत वस्त्र धारण करती हैं, जो शुद्धता और ज्ञान का प्रतीक है। उनके हाथों में वीणा होती है, जो संतुलित वाणी और रचनात्मकता का संकेत देती है, जबकि उनका वाहन हंस विवेक और सही निर्णय लेने की क्षमता का प्रतीक माना जाता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि मां सरस्वती केवल किताबी ज्ञान नहीं देतीं, बल्कि सही सोच, स्पष्ट अभिव्यक्ति और जीवन में सही रास्ता चुनने की बुद्धि भी प्रदान करती हैं। यही कारण है कि जब करियर में भ्रम, पढ़ाई में रुकावट या निर्णय लेने में कठिनाई आती है, तब मां सरस्वती की उपासना विशेष रूप से फलदायी मानी जाती है।

मां सरस्वती की पूजा और मंत्र जाप का प्रभाव तभी गहरा होता है जब साधक मन, विचार और आचरण से भी शुद्ध हो। पूजा से पहले स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनना, पूजा स्थल को साफ रखना और मन में सकारात्मक भावना रखना अत्यंत आवश्यक माना गया है। पूजा के समय हाथ में फूल, अक्षत, तिल, फल और मिठाई लेकर संकल्प किया जाता है और यह भावना रखी जाती है कि यह पूजा केवल किसी इच्छा की पूर्ति के लिए नहीं, बल्कि ज्ञान और विवेक की प्राप्ति के लिए की जा रही है। इसके बाद मां सरस्वती के समक्ष दीप, धूप और गुगुल अर्पित कर वातावरण को सात्विक बनाया जाता है।

मंत्र जाप मां सरस्वती की साधना का सबसे प्रभावी माध्यम माना गया है। मंत्रों को केवल शब्दों का समूह नहीं माना जाता, बल्कि इन्हें ध्वनि ऊर्जा कहा गया है, जो मन और मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव डालती है। नियमित रूप से मंत्र जाप करने से मन की चंचलता कम होती है, एकाग्रता बढ़ती है और विचारों में स्पष्टता आती है। विशेष रूप से विद्यार्थियों और करियर को लेकर संघर्ष कर रहे लोगों के लिए यह साधना अत्यंत लाभकारी मानी गई है।

मां सरस्वती का बीज मंत्र 'ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः' सबसे अधिक प्रचलित और प्रभावशाली माना जाता है। इस मंत्र का नियमित जाप स्मरण शक्ति को तीव्र करता है और सीखने की क्षमता बढ़ाता है। ऐसा माना जाता है कि जो विद्यार्थी रोज सुबह शांत मन से इस मंत्र का जाप करते हैं, उनके लिए कठिन विषय भी धीरे-धीरे सहज होने लगते हैं। यह मंत्र मानसिक जड़ता को तोड़कर नई ऊर्जा का संचार करता है।

मां सरस्वती की स्तुति के रूप में प्रसिद्ध मंत्र 'या कुन्देन्दु तुषारहार धवला' भी अत्यंत प्रभावशाली माना गया है। इस मंत्र का भाव यह है कि मां सरस्वती अपने साधक के जीवन से अज्ञान के अंधकार को दूर कर प्रकाश का संचार करें। इस मंत्र के नियमित पाठ से वाणी में मधुरता आती है, लेखन और बोलने की क्षमता बेहतर होती है और रचनात्मक सोच विकसित होती है। यही कारण है कि लेखक, पत्रकार, शिक्षक, वक्ता और कलाकार इस मंत्र को विशेष महत्व देते हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण मंत्र 'सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि' विशेष रूप से नई शुरुआत के लिए प्रयोग किया जाता है। जब कोई विद्यार्थी नई कक्षा में प्रवेश करता है, कोई व्यक्ति नया कोर्स, नई नौकरी या नया कार्य शुरू करता है, तब इस मंत्र का जाप शुभ माना जाता है। यह मंत्र कार्य में सफलता, निरंतर प्रगति और आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायक माना गया है।

मां सरस्वती के कुछ मंत्र ऐसे भी माने गए हैं जो विशेष रूप से मानसिक भय, आत्मसंदेह और असफलता की भावना को दूर करने में सहायक होते हैं। 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वाग्देव्यै सरस्वत्यै नमः' जैसे मंत्रों का जाप व्यक्ति की वाणी, बुद्धि और सौभाग्य को संतुलित करता है। इसका प्रभाव विशेष रूप से उन लोगों पर देखा जाता है जिन्हें इंटरव्यू, परीक्षा या सार्वजनिक मंच पर बोलने में झिझक या डर महसूस होता है।

मंत्र जाप करते समय समय, दिशा और नियमों का पालन भी महत्वपूर्ण माना गया है। प्रातःकाल या ब्रह्म मुहूर्त में किया गया जाप अधिक प्रभावशाली माना जाता है। सफेद या पीले आसन पर बैठकर, पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके मंत्र जाप करना श्रेष्ठ कहा गया है। मंत्रों की संख्या निश्चित रखना और रोज एक ही समय पर जाप करना साधना की शक्ति को कई गुना बढ़ा देता है।

मां सरस्वती की कृपा केवल पूजा और मंत्रों से ही नहीं, बल्कि आचरण से भी प्राप्त होती है। सत्य बोलना, अहंकार से दूर रहना, विद्या का सम्मान करना और ज्ञान का दुरुपयोग न करना—ये सभी बातें मां सरस्वती को अत्यंत प्रिय मानी गई हैं। कहा जाता है कि जहां विनम्रता, अनुशासन और सीखने की इच्छा होती है, वहां मां सरस्वती स्वयं निवास करती हैं।

बसंत पंचमी को मां सरस्वती की उपासना का विशेष पर्व माना गया है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि अन्य दिनों में साधना का फल नहीं मिलता। जो व्यक्ति नियमित रूप से श्रद्धा और विश्वास के साथ मां सरस्वती का स्मरण करता है, उसके जीवन में धीरे-धीरे स्पष्टता, स्थिरता और सफलता आने लगती है। करियर में आ रही रुकावटें दूर होती हैं, पढ़ाई में मन लगने लगता है और निर्णय लेने की क्षमता मजबूत होती है।

इस प्रकार मां सरस्वती की उपासना और मंत्र साधना केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं है, बल्कि यह मन, बुद्धि और जीवन को संतुलित करने की एक गहरी प्रक्रिया है। जो व्यक्ति इसे धैर्य, नियम और श्रद्धा के साथ अपनाता है, उसके लिए ज्ञान केवल किताबों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में उसका मार्गदर्शन करने लगता है। यही मां सरस्वती की सबसे बड़ी कृपा और सबसे बड़ा आशीर्वाद है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व : अमर विरासत की उज्ज्वल गाथा,स्वर्णमय सोमनाथ का पुनः स्थापित हो रहा वैभव

▸▸ श्री सोमनाथ मंदिर पर 1500 से अधिक कलश स्वर्ण जड़ित हुए

▸▸ सोमनाथ मंदिर का गर्भगृह, गर्भगृह के द्वार तथा द्वार के पास के स्तंभ, थाल आदि स्वर्ण से अलंकृत

▸▸ श्री सोमनाथ मंदिर के शिखर पर स्थापित ध्वदंड और उसके साथ जुड़ा त्रिशूल भी है स्वर्ण जड़ित

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इतिहास पुराणों में वर्णित सोमनाथ का वैभव पुनः स्थापित हो रहा है : इतिहासप्रेमी तथा अध्ययनी श्री भास्करभाई वैद्य

▸▸ प्रधानमंत्री तथा सोमनाथ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र मोदी के दिशादर्शन में पुनः स्थापित हो रही सोमनाथ की पौराणिक वैभवता तथा भव्यता

अविनाशी भारतीय संस्कृति के अप्रतिम प्रतीक श्री सोमनाथ मंदिर पर आज 1500 से अधिक स्वर्ण कलश सुशोभित हो रहे हैं। श्री सोमनाथ मंदिर का गर्भगृह, शिवलिंग पर छत्र, गर्भगृह के द्वार तथा द्वार के पास के स्तंभ, मंदिर के शिखर पर स्थापित ध्वजदंड और उससे जुड़ा त्रिशूल आदि सोमनाथ के पुनर्जीवित हुए वैभव की साक्षी दे रहे हैं। इस संदर्भ में सोमनाथ के इतिहासप्रेमी तथा अध्ययनी श्री भास्करभाई वैद्य कहते हैं कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इतिहास पुराणों में वर्णित सोमनाथ का वैभव पुनः स्थापित हो रहा है। ऐतिहासिक एवं पौराणिक ग्रंथों में सोमनाथ की वैभवता तथा समृद्धि का जो वर्णन देखने को मिलता है, उसके अनुरूप एवं पौराणिक महत्व को बनाए रखते हुए ऐश्वर्य पुनः स्थापित किया जा रहा है। महत्वपूर्ण है कि ग्रंथों में उल्लेख के अनुसार सदियों पूर्व भारी वजनदार सोने की श्रृंखला तथा घंट, रत्न जड़ित स्तंभ आदि वैभव से सोमनाथ मंदिर जगमगाता था। श्री सोमनाथ मंदिर के वैभव का लेखक कनैयालाल मुनशी ने अपनी पुस्तकों में भी उल्लेख किया है। सोमनाथ मंदिर का यह वैभव केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी विश्वभर में विख्यात था। इस संदर्भ में श्री वैद्य कहते हैं कि भगवान सोमनाथ के लिए विशेष रूप से कश्मीर से केसर के फूल और हरिद्वार से गंगाजल लाया जाता था। श्री सोमनाथ मंदिर अपनी अपार वैभवता तथा भव्यता से समृद्ध था। उन्होंने कहा कि सोमनाथ मंदिर को स्वर्णमय बनाने का प्रारंभ तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में हुआ था। श्री मोदी सोमनाथ मंदिर के स्वर्ण जड़ित होने के प्रसंगों में उपस्थित रहे थे। श्री वैद्य कहते हैं कि अनन्य शिवभक्तों तथा श्रेष्ठियों के दान से सोमनाथ को स्वर्णमय बनाया जा रहा है। वर्ष 2002 में राजकोट के एक परिवार ने सोमनाथ मंदिर में पहले 75 किलो का थाल अर्पण किया। इसके बाद लखी परिवार ने भी सोने का दान देने का संकल्प किया। कहा जा सकता है कि इसके साथ ही श्री सोमनाथ मंदिर को कुछ हद तक स्वर्णमय करने की शुरुआत हुई। आज भी सोमनाथ ट्रस्ट की स्वर्ण कलश योजना के माध्यम से कई दाताओं ने मंदिर पर स्थित कलशों को स्वर्ण जड़ित कराया है। उन्होंने कहा कि भारतीय अस्मिता के प्रतीक सोमनाथ तीर्थक्षेत्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन से समुद्र तट पर भव्य वॉक-वे, श्रद्धालुओं के लिए दर्शन की सुलभ व्यवस्थाएँ, गोल्फ कार आदि सुविधाएँ विकसित की गई हैं।

वडोदरा मंडल के श्री अपूर्व तिवारी एवं श्री चिराग मित्तल अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार – 2025 से सम्मानित

(जीएनएस)। माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव द्वारा नई दिल्ली स्थित इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एंड एक्सपो सेंटर, यशोभूमि में शुक्रवार, 09 जनवरी, 2026 को आयोजित 70वें रेल सप्ताह केंद्रीय समारोह में पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री अपूर्व तिवारी एवं उप मुख्य इंजीनियर श्री चिराग मित्तल को अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार – 2025 से सम्मानित किया गया।

पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना ने बताया कि इस वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर सभी जोनल रेलवेज़ से लगभग 100 रेल कर्मचारियों को व्यक्तिगत पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनमें से पश्चिम रेलवे के सात अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनकी सराहनीय एवं अनुकरणीय सेवाओं के लिए अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया, जो उनके असाधारण समर्पण, पेशेवर दक्षता तथा कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है। पश्चिम रेलवे के उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री अपूर्व तिवारी एवं उप मुख्य इंजीनियर श्री चिराग मित्तल को अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार – 2025 से सम्मानित किया गया।

वडोदरा मंडल के उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर (कार्य) श्री अपूर्व तिवारी को इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रणालियों के सफल कमीशनिंग तथा परंपरागत सिगनलिंग के स्थान पर आधुनिक मल्टी सेक्शन डिजिटल एक्सल काउंटर (MSDAC) प्रणालियों के प्रतिस्थापन को कई खंडों में लक्ष्य तिथियों से पूर्व पूर्ण करने के लिए सम्मानित किया गया। उनके इस कार्य से परियोजना निष्पादन में नए मानदंड स्थापित हुए तथा रेल परिचालन की सुरक्षा एवं दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

उप मुख्य इंजीनियर (सर्वे एवं निर्माण) श्री चिराग मित्तल को रिकॉर्ड समय-सीमा में प्रमुख सिविल इंजीनियरिंग कार्यों के पूर्ण होने में उनकी उत्कृष्ट भूमिका के लिए सम्मानित किया गया। इनमें दोहरीकरण खंडों का कमीशनिंग, महत्वपूर्ण पुलों का निर्माण, स्टेशन पुनर्विकास कार्य तथा साइडिंग परियोजनाएँ शामिल हैं, जिनसे अवसंरचना क्षमता, यात्री सुविधाओं एवं परिचालन दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

प्रतिष्ठित व्यक्तिगत पुरस्कारों की प्राप्ति में पश्चिम रेलवे का उत्कृष्ट प्रदर्शन उसके अधिकारियों एवं कर्मचारियों की निष्ठा, पेशेवर दक्षता तथा टीम भावना का सशक्त प्रमाण है। ये उपलब्धियाँ सुरक्षा, सेवा उत्कृष्टता, नवाचार एवं अवसंरचना विकास के प्रति पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल की अटूट प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करती हैं तथा भारतीय रेल को एक आधुनिक, दक्ष एवं यात्री-केंद्रित राष्ट्रीय परिवहन व्यवस्था के रूप में विकसित करने के व्यापक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

भगवान सोमनाथ के समक्ष अरब सागर के आकाश में तीन हजार ड्रोन से बनी विभिन्न आकृतियां

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में आयोजित ड्रोन शो को देखकर मंत्रमुग्ध हुए लोग

▸▸ ड्रोन के जरिए आकाश में बनी त्रिशूल, ओम, वीर हमीरजी, अहिल्याबाई होल्कर, सरदार वल्लभभाई पटेल और श्री नरेन्द्र मोदी की आकृतियां

▸▸ ड्रोन शो के बाद सोमनाथ मंदिर के निकट स्थित समुद्र तट भव्य आतिशबाजी से जगमगा उठा

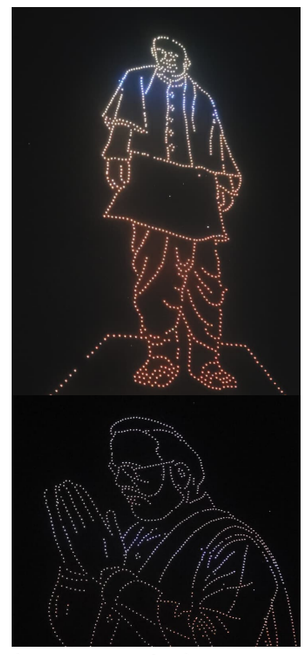

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत शनिवार रात सोमनाथ मंदिर परिसर में भव्य और आकर्षक ड्रोन शो का आयोजन किया गया। इस अनोखे आयोजन से पवित्र सोमनाथ धाम में उत्सवमय और हर्षोल्लास का माहौल बन गया था।

इस ड्रोन शो में लगभग 3000 ड्रोन के जरिए अरब सागर के ऊपर आकाश में प्रकाश के अनूठे संयोजन के माध्यम से विभिन्न बिंदु चित्र-रंगीन आकृतियां सृजित की गईं। आकाश में उभरते प्रकाशमय दृश्य लोगों के आकर्षण का मुख्य केंद्र बन गए। ड्रोन लाइट के माध्यम से त्रिशूल, ओम, तांडव नृत्य करते भगवान शंकर, वीर हमीरजी, अहिल्याबाई होल्कर, सोमनाथ पर आक्रमण, सरदार वल्लभभाई पटेल, स्वाभिमान पर्व का लोगो और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की आकृतियां प्रदर्शित की गईं। इन सभी आकृतियों ने भारतीय संस्कृति, आत्मगौरव और राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतिबिंब प्रस्तुत किया।

इस भव्य ड्रोन शो का संचालन कुल 40 प्रशिक्षित ऑपरेटरों ने सुव्यवस्थित तरीके से किया। लगभग 15 मिनट तक चले इस शो ने उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पटांगण में उपस्थित रहकर इस भव्य ड्रोन शो को निहारकर प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने भी इन अद्भुत दृश्यों को अपलक देखकर गौरव और आनंद का अनुभव किया।

ड्रोन शो पूरा होने के बाद तुरंत ही निकट स्थित समुद्र तट पर भव्य आतिशबाजी की गई। विभिन्न प्रकार के क्रैकर्स से आकाश रोशनी से नहाया हुआ नजर आ रहा था।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सोमनाथ हेलीपैड पर भावपूर्ण स्वागत

(जीएनएस)। गांधीनगर, 10 जनवरी द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रथम ज्योतिर्लिंग श्री सोमनाथ महादेव के सान्निध्य में आयोजित हो रहे 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' में शामिल होने के लिए शनिवार शाम सोमनाथ पहुंचे, जहां मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने उनका भावपूर्ण स्वागत किया।

हेलीपैड पर प्रधानमंत्री के स्वागत-सत्कार के लिए उप मुख्यमंत्री श्री हर्षभाई संघवी, शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा, मांडवी के विधायक श्री अनिरुद्धभाई दवे, कलेक्टर श्री एन.वी. उपाध्याय, जिला पुलिस अधीक्षक श्री जयदीपसिंह जाडेजा और अग्रणी डॉ. संजयभाई परमार उपस्थित रहे।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत उप मुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री श्री हर्ष संघवी ने स्थल मुलाकात लेकर कानून-व्यवस्था की समीक्षा की

उप मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री की सोमनाथ यात्रा के चलते मंदिर परिसर, सुरक्षा व्यवस्था तथा यातायात व्यवस्था का निरीक्षण किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की गरिमाममय उपस्थिति में सोमनाथ में आयोजित होने वाले सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के सुचारु आयोजन तथा कानून-व्यवस्था की स्थिति सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से राज्य के उप मुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री श्री हर्ष संघवी ने शनिवार को सोमनाथ महादेव परिसर तथा आसपास के क्षेत्रों की प्रत्यक्ष मुलाकात ली। इस पवित्र अवसर पर सुरक्षा व्यवस्था में कोई कमी न रहे; इसके लिए उन्होंने उच्चाधिकारियों के साथ ग्राउंड लेवल पर तैयारियों की समीक्षा करते हुए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया। इस दौरान श्री संघवी ने मंदिर परिसर के मुख्य प्रवेश द्वार, आसपास के मुख्य एवं वैकल्पिक मार्गों

तथा श्रद्धालुओं-यात्रियों की आवागमन व्यवस्था का सूक्ष्मतापूर्वक निरीक्षण किया। उन्होंने सुरक्षा बंदोबस्त, यातायात सचालन तथा पार्किंग व्यवस्था के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। इसके साथ ही; प्रधानमंत्री के कार्यक्रम के दौरान उन्होंने स्थानीय नागरिकों तथा देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को भी किसी भी प्रकार की असुविधा न हो; उसका ध्यान रखने का भी सुझाव दिया।

गृह मंत्री ने सुरक्षा व्यवस्था को और अभेद्य बनाने के लिए भीड़ नियंत्रण, इमर्जेंसी सेवाओं की सज्जता तथा टेक्नोलॉजी के उपयोग को लेकर सम्बद्ध अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने प्रशासन का आह्वान किया कि सभी विभागों के बीच आपसी तालमेल बना रहे और कार्यक्रम शांतिपूर्ण तथा सफलतापूर्ण ढंग से संपन्न हो। इस अवसर पर केबिनेट मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी व डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा, राज्य मंत्री श्री कौशिक वेकरिया, सांसद श्री राजेश चुडासमा सहित जिला प्रशासन तथा पुलिस विभाग के उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

'शिव समा रहे मुझमें और मैं शून्य हो रहा हूं'

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में हंसराज रघुवंशी के साथ भोलेनाथ के भक्ति गीतों में शिवमय हुए हजारों भक्त

राज्य और देश भर से आए दर्शनार्थियों ने गुजरात सरकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रशंसा की

(जीएनएस)। गांधीनगरः सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत सोमनाथ मंदिर परिसर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के तीसरे दिन शनिवार को हजारों शिव भक्त प्रसिद्ध गायक हंसराज रघुवंशी के शिव भक्ति के गीत-संगीत में श्रद्धाभाव के साथ शिवमय हो गए।

'शिव सम रहे मुझमें और मैं शून्य हो रहा हूं', 'जयकारा बोलो, जयकारा', 'मेरा भोला है भंडारी' और 'भोलेनाथ की शादी है तो नाचेंगे' जैसे शिव भक्ति के भजन-गीतों की प्रस्तुति से प्रवासी भक्त शिव भक्ति के रंग में रंग गए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरक उपस्थिति में मनाए जा रहे स्वाभिमान पर्व के तीसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम के आकर्षण के कारण सोमनाथ मंदिर का समूचा परिसर भक्तों की भीड़ से भर गया। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन और उप मुख्यमंत्री श्री हर्षभाई संघवी के समन्वय से सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के कार्यक्रमों की सुंदर प्रस्तुति से यह पर्व हजारों शिव भक्तों के लिए यादगार बन गया है।

शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा और विधि एवं ऊर्जा राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत 72 घंटे के अखंड ओंकार जाप में भावपूर्वक सहभागी हुए

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व राष्ट्र के अडिग स्वाभिमान का प्रतीक

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत शनिवार को शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा और विधि एवं ऊर्जा राज्य मंत्री श्री कौशिकभाई वेकरिया ने ऋषि कुमारों द्वारा चल रहे 72 घंटे के अखंड ओंकार मंत्र के जाप में भावपूर्वक सहभागी हुए।

इस अवसर पर मंत्रियों के साथ जूनागढ़ के विधायक श्री संजयभाई कारड़िया ने भी अखंड मंत्र जाप में भाग लिया।

महानुभावों ने श्री सोमनाथ महादेव के पावन दर्शन कर राज्य के नागरिकों की खुशहाली, शांति और समृद्धि के लिए प्रार्थना की।

इसके अलावा, राजकोट की विधायक डॉ. दर्शिताबेन शाह ने भी श्री सोमनाथ महादेव के दर्शन किए।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत आयोजित इस आध्यात्मिक कार्यक्रम के माध्यम से श्रद्धा, संस्कृति और स्वाभिमान की भावना को और भी मजबूत बनाया जा रहा है।

पवित्र प्रभास क्षेत्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का महिला धुन मंडली ने शिव भजनों से किया स्वागत

करताल-मंजीरे जैसे तालवाद्यों के संग भजन-कीर्तन से समग्र प्रांगण बना शिवमय

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत शनिवार को प्रभास क्षेत्र की पावन भूमि पर पधारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अहमदाबाद की धुन मंडली की लगभग 450 महिलाओं द्वारा शिव भजनों से ऊष्मापूर्वक स्वागत किया गया। सोमनाथ मंदिर के विशाल प्रांगण में प्रधानमंत्री के आगमन के समय लगभग 450 बहनों द्वारा चल रहे अखंड भजन-कीर्तन के साथ शिवमय वातावरण में उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया।

इस प्रकार; प्रधानमंत्री के मंदिर आगमन के समय करताल-मंजीरे जैसे तालवाद्यों के संग भजन-कीर्तन से समग्र प्रांगण शिवमय बना।

बामनिया यार्ड में क्रॉसओवर शिफ्टिंग कार्य निर्धारित समय में हुआ पूरा

पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल की उपलब्धि, ट्रेन संचालन में बढ़ेगी संरक्षा,सुरक्षा व गति

(जीएनएस)। रतलाम। पश्चिम रेलवे रतलाम मंडल के रतलाम - गोधरा खंड के बामनिया यार्ड डाउन लाइन पर महत्वपूर्ण ट्रैक सुधार कार्य निर्धारित समयावधि में सफलतापूर्वक पूरा हो गया।

रतलाम मंडल के इंजीनियरिंग, सिगनल, परिचालन, बिजली टी आर डी. सहित अन्य विभाग के आपसी समन्वय के कारण किलो मी. नं. 610/20-24 पर स्थित पॉइंट नंबर 129-130 के क्रॉसओवर पर खराब लेआउट को ठीक करने हेतु 09 जनवरी, 2025 को 14:55 से 17:55 बजे तक लगभग तीन घंटे का ब्लॉक लेकर पॉइंट नंबर 130 को रतलाम की ओर 1.45 मीटर शिफ्ट किया गया।

पश्चिम रेलवे के रतलाम मंडल जनसंपर्क अधिकारी श्री मुकेश कुमार द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार कार्य के दौरान मेन लाइन में 3 और क्रॉसओवर पर 2 नई स्लीपरें सहित कुल 6 स्लीपरें बिछाई गईं, जिससे ट्रैक लेआउट मानकों के अनुरूप हो गया। इस कार्य में सहायक मंडल इंजीनियर (पूर्व) सहित अन्य अधिकारी के साथ ही 4 पर्यवेक्षक और 60 श्रमिकों की टीम ने जेसीबी, टैंपिंग मशीन, टावर वेगन के साथ-साथ रोलर्स, मैकेनिकल ट्रैक जैक्स, रेल कटर एवं अन्य मशीनों का उपयोग कर निर्धारित समयसीमा में लक्ष्य हासिल किया। इस सुधार से न केवल यात्रियों की सुरक्षा बढ़ेगी, बल्कि ट्रेनों की गति व संचालन दक्षता में भी सुधार होगा।

पश्चिम रेलवे का रतलाम मंडल संरक्षित एवं सुरक्षित ट्रेन परिचालन के लिए ट्रैक रख रखाव में उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के प्रति कटिबद्ध है।

जनसंपर्क विभाग
रतलाम मंडल

सप्ताह के दौरान सोना वायदा में 1938 रुपये और चांदी वायदा में 7451 रुपये की वृद्धिः क्रूड ऑयल वायदा 60 रुपये लुढ़का

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 2 से 8 जनवरी के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 2147430.67 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 424570.72 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 1722772.95 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 35806 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 37243.19 करोड़ रुपये का हुआ।

आलोच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 322621.46 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 136999 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 139149 रुपये के उच्च और 135504 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 135804 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 1938 रुपये या 1.43 फीसदी की तेजी के संग 137742 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 730 रुपये या 0.65 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 112666 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा 110 रुपये या 0.79 फीसदी की तेजी के संग सप्ताह के अंत में 14054 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर पहुंचा। सोना-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 136143 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 139070 रुपये के उच्च और 135525 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 1912 रुपये या 1.41 फीसदी की मजबूती के साथ 137683 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा प्रति 10 ग्राम सप्ताह के आरंभ में 137141 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 139950 रुपये के उच्च और 136540 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 136697 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 1578 रुपये या 1.15 फीसदी की बढ़त के साथ 138275 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 239041 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 259692 रुपये के ऑल टाइम हाई और नीचे में 235000 रुपये पर पहुंचकर, 235873 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 7451 रुपये या 3.16 फीसदी बढ़कर 243324 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 7989 रुपये या 3.36 फीसदी की तेजी के संग 245987 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 8017 रुपये या 3.37 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट सप्ताह के अंत में 246027 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

मेटल वर्ग में 55769.40 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 22.3 रुपये या 1.73 फीसदी औंधकर 1270.2 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 70 पैसे या 0.23 फीसदी की नरमी के साथ 307.35 रुपये प्रति किलो सप्ताह के अंत में बोला गया। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 11.55 रुपये या 3.88 फीसदी बढ़कर 308.85 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ।

कच्छ एवं सौराष्ट्र क्षेत्र के लिए 11 एवं 12 जनवरी को राजकोट में आयोजित होगा VGRC 2026

गांधीनगर : सौराष्ट्र-कच्छ क्षेत्र के लिए वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (VGRC) 11-12 जनवरी 2026 को राजकोट में आयोजित होने जा रही है। दो दिवसीय इस सम्मेलन का उद्घाटन गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उपमुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा निर्धारित भारत के 'पंचामृत' लक्ष्यों, वर्ष 2030 तक 500 गीगावॉट गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता, देश की 50 प्रतिशत ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति नवीकरणीय स्रोतों से, कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में एक बिलियन टन की कमी, 2030 तक कार्बन इंटेंसिटी में 45 प्रतिशत की गिरावट और 2070 तक नेट-ज़ीरो कार्बन उत्सर्जन, को साकार करने की दिशा में गुजरात तेजी से आगे बढ़ रहा है।

नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी राज्य के रूप में गुजरात ने नीतियों, बड़े पैमाने की परियोजनाओं और नवाचार-आधारित पहलों के माध्यम से एक मज़बूत स्वच्छ ऊर्जा इकोसिस्टम विकसित किया है। इसी व्यापक दृष्टि के अनुरूप, ऊर्जा एवं पेट्रोकेमिकल्स विभाग (EPD) वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (VGRC) में संवाद और विचार-विमर्श के लिए सेमिनार, राउंडटेबल और पैनल चर्चाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रस्तुत करेगा।

इस सम्मेलन के पहले दिन, 11 जनवरी को, ऊर्जा क्षेत्र में उभरते अवसरों और भविष्य की दिशा पर केंद्रित कई महत्वपूर्ण सत्र आयोजित किए जाएंगे। इनमें 'ओशन ऑफ अपॉर्च्युनिटीज - ब्लू एनर्जी, ग्रीन फ्यूचर' विषय पर CEO राउंडटेबल, 'ग्रीन स्टार्टअप्स फायरसाइड चैट' और 'कार्बन टू क्रॉप्स: ग्रीनर मॉलीक्यूल्स, ग्रेटर यील्ड्स' शामिल हैं। साथ ही, एजेंडा में 'गुजरात- इंडियाज़ एनर्जी गेटवे: लीडिंग द कर्व इन ऑयल एंड गैस' पर भी चर्चा होगी। इसके अलावा यहाँ आयोजित प्रदर्शनी-सह-व्यापार शो में कृषि के लिए दिन के समय बिजली आपूर्ति की सर्वोत्तम प्रथाओं, नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन हेतु सुनिश्चित कनेक्टिविटी और पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत सोलर रूफटॉप में गुजरात के देश में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को प्रदर्शित किया जाएगा।

दूसरे दिन, 12 जनवरी को, सम्मेलन की शुरुआत प्रमुख कार्यक्रम 'सोलर डिविडेंड्स: पीएम-कुसुम एवं पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के माध्यम से सशक्तिकरण' से होगी, जो विकेन्द्रीकृत सौर ऊर्जा को जन-आधारित अभियान के रूप में प्रस्तुत करेगा। इस अवसर पर GUVNL और उसकी सहायक कंपनियों की सर्वोत्तम प्रथाओं पर आधारित एक संकलन का विमोचन किया जाएगा, कई महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर होंगे और स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले लाभार्थियों, विक्रेताओं तथा कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा। 'सोलर डिविडेंड्स: PM KUSUM और PM सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना सत्र के माध्यम से गुजरात की विकेन्द्रीकृत सौर ऊर्जा अपनाने में हासिल उपलब्धियों को रेखांकित किया जाएगा, वहीं 'मिशन 100 गीगावॉट (शपथ पत्र)' पर आयोजित उच्च-स्तरीय पैनल चर्चा में वर्ष 2030 तक 100 गीगावॉट से अधिक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता प्राप्त करने के राज्य के संकल्प को सामने रखा जाएगा। ग्रीन हाइड्रोजन और परमाणु ऊर्जा पर केंद्रित सत्र गुजरात के उभरते हाइड्रोजन इकोसिस्टम और भारत की दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा में परमाणु ऊर्जा की भूमिका पर प्रकाश डालेंगे। इसके समानांतर, 'ओशन ऑफ अपॉर्च्युनिटीज- ब्लू एनर्जी, ग्रीन फ्यूचर' पर CEO राउंडटेबल के माध्यम से निकट-तटीय पवन ऊर्जा और ब्लू एनर्जी की संभावनाओं का आकलन किया जाएगा। सम्मेलन के दौरान आयोजित थीमैटिक सेमिनारों में 'वन कॉरिडोर, मेनी कनेक्शंस: क्लाइमेट-रेजिलिएंट एनर्जी सिस्टम्स' के तहत ट्रांसमिशन योजना और ग्रिड रेजिलिएंट, 'ग्रीन इंडस्ट्री के लिए बायोमास अनलॉकिंग द अनटेप्ड पोटेंशियल' के तहत औद्योगिक डीकार्बोनाइजेशन, तथा 'AI/ML के माध्यम से स्मार्ट रिन्यूएबल एनर्जी इंटीग्रेशन और स्टैडियल स्टोरेज सॉल्यूशंस' के तहत AI-आधारित ग्रिड अनुकूलन पर चर्चा की जाएगी। GETCO के नेतृत्व में 'क्लीन एनर्जी को सक्षम करने वाली केबल्स' पर विशेष चर्चाएँ और एक वेंडर मीट आयोजित की जाएगी, जो ग्रिड कनेक्टिविटी और उद्योग सहयोग पर केंद्रित होगी।

इसके अतिरिक्त, विद्युत क्षेत्र में उन्नत साइबर सुरक्षा तथा कार्बन टू क्रॉप्स: ग्रीनर मॉलीक्यूल्स, ग्रेटर यील्ड्स पर भी चर्चा होगी, जो सतत कृषि समाधानों पर केंद्रित होंगी। ग्रीन स्टार्टअप्स फायरसाइड चैट और स्टार्टअप सम्मान कार्यक्रम नवोन्मेषकों को निवेशकों, कॉरपोरेट्स और नीति-निर्माताओं से संवाद का मंच प्रदान करेंगे, साथ ही स्वच्छ ऊर्जा और नेट-ज़ीरो लक्ष्यों में उनके योगदान को मान्यता देंगे।

इतना ही नहीं यह सम्मेलन B2B, B2G और G2G बैठकों को भी सुगम बनाएगा। साथ ही ये सम्मेलन ऊर्जा सुरक्षा, सततता व औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता के प्रति गुजरात के एकीकृत दृष्टिकोण को भी प्रदर्शित करने के साथ-साथ ऊर्जा स्वतंत्रता और विकसित भारत@2047 की दिशा में भारत की यात्रा में राज्य की अग्रणी भूमिका को भी सुदृढ़ करेगा।

▶▶ VGRC में गुजरात की नवीकरणीय ऊर्जा में अग्रणी भूमिका और भावी दृष्टि पर होंगी रणनीतिक चर्चाएं

▶▶ प्रधानमंत्री जी के "पंचामृत" के प्रति गुजरात की प्रतिबद्धता अटूट, वर्ष 2030 तक 100 गीगावॉट से अधिक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता हासिल करना गुजरात का लक्ष्य

▶▶ ग्रीन हाइड्रोजन पर होने वाली पैनल चर्चाओं में गुजरात की ग्रीन हाइड्रोजन नीति-2025 और इकोसिस्टम विकास पर किया जाएगा विचार-विमर्श

▶▶ भारत के परमाणु ऊर्जा रोडमैप में गुजरात की भूमिका को भी किया जाएगा प्रदर्शित

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व

जामनगर के काशी विश्वनाथ मंदिर में 72 घण्टों के अखंड मंत्रोच्चार, महाआरती तथा भव्य सत्संग का भावपूर्ण आयोजन

विधायक श्री दिव्येशभाई अकबरी, अग्रणियों तथा धर्मप्रेमियों की उपस्थिति में मंदिर परिसर भक्तिमय बना

गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत जामनगर शहर के ऐतिहासिक एवं पौराणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण काशी विश्वनाथ मंदिर में 72 घण्टों तक अखंड मंत्रोच्चार का भव्य तथा दिव्य आयोजन किया गया है। 10 जनवरी तक मंदिर में सत्संग, भजन, महाआरती तथा मंत्रोच्चार सहित आयोजन किए गए हैं।

इस अनुष्ठान के दौरान विद्वान ब्राह्मणों द्वारा सतत वैदिक मंत्रोच्चार किया जा रहा है, जिससे समग्र मंदिर परिसर भक्ति, शांति एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत बना है। मंत्रोच्चार के साथसाथ हर दिन शाम को महाआरती का भव्य आयोजन किया जा रहा है, जिसमें उपस्थित रहकर श्रद्धालु भावविभोर बने हैं। ओम नमः शिवाय, ओम नमः शिवाय की धुन से सत्संग के दौरान समग्र वातावरण आध्यात्मिक बना।

सत्संग कार्यक्रम के आयोजन में विधायक श्री दिव्येशभाई अकबरी, उप महापौर श्री कृष्णाबेन सोढा, स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री नीलेशभाई कथगरा, अग्रणी श्री बीनाबेन कोठारी, पार्षदगण आदि अग्रणी तथा भक्तगण उपस्थित रहकर सहभागी हुए।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व

'हरि तथा हर' की तीर्थभूमि प्रभास पाटण; शिव श्याम एवं सनातन संस्कृति का पवित्र संगम

▶▶ सोमनाथ, भालका तीर्थ तथा प्राची; स्वाभिमान, भक्ति एवं जीवमात्र की मुक्ति (मोक्ष) का द्वार

▶▶ प्रभास पाटण की भूमि के कण-कण में शिव, श्याम (कृष्ण) तथा हमारी सनातन संस्कृति की गाथा आज भी गर्वपूर्वक गूंज रही है

गांधीनगर : प्रभास पाटण; इस भूमि में केवल सरस्वती, कपिला तथा हिरण्य जैसी पवित्र नदियों का संगम ही नहीं, बल्कि अनेक पवित्र तथा पौराणिक संगम यहाँ की धर्म, धरोहर व सनातन के स्वाभिमान के साथ फहरा रहे ध्वज की इस भूमि में घुले हुए हैं। प्रभास पाटण का यह पवित्र स्थल हिन्दू धर्म के इतिहास तथा पौराणिक कथाओं में अनन्य स्थान रखता है। यहाँ हर (भगवान शिव) तथा हरि (भगवान विष्णु के कृष्णावतार) की पूजा और उनकी लीलाओं का संगम होता है, जिसके कारण प्रभास पाटण की इस पवित्र भूमि को 'हरि तथा हर की तीर्थभूमि' के रूप में जाना जाता है। स्कंद पुराण, शिव पुराण तथा महाभारत जैसे पौराणिक ग्रंथों में इस स्थल का महत्वपूर्ण तीर्थक्षेत्र के रूप में वर्णन हुआ है, जहाँ त्रिवेणी संगम (हिरण, कपिला व सरस्वती नदियों) पर पितृ तर्पण तथा मोक्ष प्राप्ति का महत्व है। सोमनाथ मंदिर, भालका तीर्थ, श्री कृष्ण का समाधि स्थल और प्राची तीर्थ; इन पवित्र स्थानों के साथ इस भूमि के कण-कण में शिव, श्याम (कृष्ण) और हमारी सनातन संस्कृति की गाथा गर्वपूर्वक आज भी गूंज रही है।

हर हर महादेव के आकाश को पार कर रहे नाद के साथ सतत गूंजते पवित्र ज्योतिर्लिंगों में प्रथम तथा सबसे प्राचीन सोमनाथ महादेव मंदिर प्रभास पाटण का हृदय है। समुद्र की लहरों की गूंज और वेदमंत्रों के नाद के बीच विराजमान सोमनाथ महादेव का मंदिर यानी केवल स्थापत्य का नमूना नहीं, बल्कि भारत की अटूट आस्था और पुनरुत्थान की जीवंत गाथा है।

चंद्र (सोम) के नाथ के रूप में जाने जाने वाले महादेव का यह मंदिर द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रथम एवं सर्वोपरि माना जाता है। चंद्र (सोम) ने इस स्थान पर ज्योतिर्लिंग के रूप में शिव को विराजमान किया है, जिससे इस मंदिर को सोमनाथ (चंद्र का रक्षक) कहा जाता है। यह भव्य एवं दिव्य देवालय अनेक आक्रमणों के बाद भी आज अडिग खड़ा है, जो हिन्दू सभ्यता की अजेय भावना तथा हिन्दू संस्कृति के लिए स्वाभिमान का प्रतीक है।

सोमनाथ मंदिर का इतिहास अनेक उतार-चढ़ाव का साक्षी रहा है। अनेक बार आक्रमणों के बावजूद सोमनाथ की आस्था कभी डिगी नहीं है। स्वतंत्रता के बाद लौह पुरुष सरदार पटेल के संकल्प से और भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के करकमलों से इस भव्य नूतन मंदिर का निर्माण हुआ, जो भारत के आत्मगौरव एवं स्वाभिमान का प्रतीक बना है।

भगवान श्री कृष्ण (हरि) की अंतिम लीला का साक्षी

प्रभास पाटण से कुछ ही दूरी पर भालका तीर्थ है, जो भूमि भगवान कृष्ण की अंतिम लीला की साक्षी रही। महाभारत युद्ध तथा यदुवंश के विनाश के बाद कृष्ण प्रभास क्षेत्र में आए। यहाँ वे पीपल के पेड़ के नीचे योग समाधि में बैठे हुए थे, तभी शिकारी जरा ने उनके पैर को हिरण की आँख मानकर बाण मारा। यह घटना द्वापर युग के अंत और कलियुग की शुरुआत की प्रतीक है। जहाँ कृष्ण ने अपने देह के त्याग की तैयारी की थी। इस स्थल पर आज मंदिर है, जहाँ कृष्ण की त्रिभंगी मुद्रा में मूर्ति है और तुलसी का पौधा रोपा गया है। तीर से घायल कृष्ण त्रिवेणी संगम की ओर चलकर आए, जहाँ उन्होंने देह त्याग किया। इस स्थल को देहोत्सर्ग तीर्थ या गोलोकधाम तीर्थ कहा जाता है। इस स्थान पर गीता मंदिर है, जहाँ माना जाता है कि कृष्ण ने उद्धव को गीता का उपदेश दिया था। यह तीर्थ मोक्ष तथा भक्ति का प्रतीक है, जहाँ श्रद्धालु-यात्री आज भी कृष्ण की लीला को याद और वंदन करते हैं।

प्रभास पाटण मे प्राची तीर्थ सरस्वती नदी के तट पर स्थित है, जो पितृ तर्पण एवं पूर्वजों के आशीर्वाद के लिए प्रसिद्ध है। प्राची तीर्थ के लिए धर्म ग्रंथों में यह भी कहा गया है कि सौ बार काशी और एक बार प्राची, जहाँ वाज्ञवल्क्य ऋषि ने सूर्य की तपस्या कर शुक्ल यजुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार कुरुक्षेत्र के युद्ध के बाद पांडव पितरों के मोक्ष तथा युद्ध के पाप से मुक्ति के लिए भगवान श्री कृष्ण की सलाह पर प्राची आए थे। उन्होंने यहाँ माधवरायजी की पूजा की और सरस्वती के तट पर तर्पण विधि की थी। प्राची में भगवान श्री कृष्ण माधवराय के रूप में विराजमान हैं। श्रद्धालुओं की श्रद्धा है कि हरि एवं हर (भीमनाथ महादेव) के सान्निध्य में पितृ कार्य करने से तीन पीढ़ियों के पितरों का उद्धार होता है। प्राची केवल भौगोलिक स्थल नहीं, बल्कि पितृ ऋण से मुक्त होने का पवित्र द्वार है, जहाँ पूर्वाभिमुख बहने वाली सरस्वती के जल एवं प्राचीन मोक्ष पीपल की छाया में हजारों श्रद्धालु अपने पूर्वजों के कल्याणार्थ तर्पण विधि करते हैं।

प्रभास पाटण केवल भूगोल के मानचित्र पर स्थित एक बिंदु नहीं, बल्कि सनातन धर्म की चेतना का अखंड केन्द्र है। यहाँ सोमनाथ की आकाश को पार करती ध्वजा भारत के अजेय स्वाभिमान की साक्षी देती है, तो भालका तथा देहोत्सर्ग की शांति भगवान श्री कृष्ण के वैकुंठ गमन की दिव्यता को प्रदर्शित करती है। ऋषि याज्ञवल्क्य की तपोभूमि तथा पांडवों के पितृ तर्पण से पवित्र हुआ प्राची तीर्थ इस समग्र क्षेत्र को ज्ञान तथा मोक्ष के संगम स्थान के रूप में स्थापित करता है। हरि एवं हर के इस अनूठे मिलन धाम में बहे वाली सरस्वती, कपिला व हिरण्य नदियाँ आज भी हर श्रद्धालु के हृदय में श्रद्धा, समर्पण एवं संस्कृति की अमर विरासत को जीवंत रखती हैं। वास्तव में, प्रभास की यह भूमि शिव, श्याम एवं सनातन संस्कृति का अक्षय तेजपुंज है।

70वें रेल सप्ताह केंद्रीय समारोह में पश्चिम रेलवे का शानदार प्रदर्शन – अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार 2025

सेवा, संरक्षा एवं अवसंरचना विकास में उत्कृष्टता का उत्सव

माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव से पश्चिम रेलवे एवं मध्य रेल के महाप्रबंधक श्री विवेक कुमार गुप्ता विभिन्न विभागों के प्रमुख विभागाध्यक्षों के साथ शील्ड प्राप्त करते हुए।

पश्चिम रेलवे ने एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी उत्कृष्ट पहचान स्थापित करते हुए अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार (AVRSP) – 2025 के अंतर्गत अनेक प्रतिष्ठित रेल सप्ताह शील्ड तथा व्यक्तिगत सम्मान प्राप्त किए। इससे रेलवे परिचालन, संरक्षा, अवसंरचना विकास एवं यात्री-केंद्रित सेवाओं में उत्कृष्टता के प्रति पश्चिम रेलवे की दृढ़ प्रतिबद्धता पुनः सिद्ध हुई है। 70वां रेल सप्ताह केंद्रीय समारोह नई दिल्ली स्थित इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एंड एक्सपो सेंटर, यशोभूमि में शुक्रवार, 09 जनवरी, 2026 को आयोजित किया गया, जिसमें माननीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने शील्ड विजेताओं एवं व्यक्तिगत पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को सम्मानित किया।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार शील्ड भारतीय रेल प्रणाली में विभिन्न परिचालन एवं तकनीकी क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन को प्रोत्साहन देने हेतु कुल 26 श्रेणियों के अंतर्गत प्रदान की गईं। राष्ट्रीय स्तर पर सभी ज़ोनल रेलवे के बीच पश्चिम रेलवे ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए अनेक प्रतिष्ठित रेलवे सप्ताह शील्ड जीतीं और इस वर्ष ज़ोनल रेलवे में सबसे अधिक शील्ड प्राप्त करने वाला रेलवे बना। समग्र स्वास्थ्य सेवा शील्ड, गैर-किराया राजस्व शील्ड, ट्रैक अनुरक्षण शील्ड तथा विद्युत इंजीनियरिंग शील्ड केवल पश्चिम रेलवे को प्राप्त हुईं, जो महत्वपूर्ण परिचालन, तकनीकी एवं चिकित्सा क्षेत्रों में निरंतर उत्कृष्टता को दर्शाती हैं। इसके अतिरिक्त, पश्चिम रेलवे ने सिविल इंजीनियरिंग शील्ड तथा सिविल इंजीनियरिंग कंस्ट्रक्शन शील्ड भी मध्य रेल के साथ संयुक्त रूप से प्राप्त कीं।

श्री विनीत अभिषेक ने आगे बताया कि इस वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर सभी जोनल रेलवेज़ से लगभग 100 रेल कर्मचारियों को व्यक्तिगत पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इनमें से पश्चिम रेलवे के सात अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनकी सराहनीय एवं अनुकरणीय सेवाओं के लिए अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया, जो उनके असाधारण समर्पण, पेशेवर दक्षता तथा कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है। पश्चिम रेलवे से अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार – 2025 प्राप्त करने वाले पुरस्कार विजेता इस प्रकार हैं— (1) लोको पायलट (गुड्स) श्री रामप्रबेश कुमार; (2) ट्रैक मेंटेनर–IV श्री बंटी कुमार; (3) प्वाइंट्समैन–बी श्री योगेशकुमार शर्मा; (4) सीनियर सेक्शन ऑफिसर श्री पिंटू शर्मा; (5) वरिष्ठ मंडल विद्युत इंजीनियर श्री अंशुल बंसल; (6) उप मुख्य इंजीनियर श्री चिराग मित्तल और (7) उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर श्री अपूर्व तिवारी

मुंबई सेंट्रल मंडल के ट्रैक मेंटेनर–IV श्री बंटी कुमार को रात्रिकालीन गश्त के दौरान टूटी हुई रेल का त्वरित पता लगाने तथा तत्परता और पेशेवर सतर्कता के साथ मौके पर ही तत्काल सुधार कार्य करने के लिए सम्मानित किया गया। उनके इस सराहनीय कार्य से सुरक्षित ट्रेन परिचालन सुनिश्चित हुआ और एक संभावित दुर्घटना को रोका जा सका।

पश्चिम रेलवे मुख्यालय के सीनियर सेक्शन ऑफिसर (लेखा) श्री पिंटू शर्मा को वित्तीय प्रणालियों एवं राजस्व लेखा प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करने में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया। उनके द्वारा व्यवस्थित मिलान, बिलिंग एवं लेखा मॉड्यूल का स्वचालन, अचिह्नित न किए गए राजस्व की पहचान तथा विभिन्न वित्तीय प्लेटफार्मों पर डेटा की विसंगतियों के सुधार से वित्तीय सटीकता एवं पारदर्शिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

अहमदाबाद मंडल के वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता (ट्रैक्शन डिस्ट्रीब्यूशन) श्री अंशुल बंसल को उदाहरणीय नेतृत्व एवं तकनीकी दक्षता के लिए सम्मानित किया गया। उन्होंने दोषपूर्ण ओएचई घटकों के बड़े पैमाने पर प्रतिस्थापन, विफलताओं के दौरान त्वरित बहाली तथा महत्वपूर्ण विद्युतीकरण कार्यों के समयबद्ध निष्पादन के माध्यम से ट्रैक्शन अवसंरचना की विश्वसनीयता में सुधार किया, जिससे परिचालन सुरक्षा एवं दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

वडोदरा मंडल के उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर (कार्य) श्री अपूर्व तिवारी को इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रणालियों के सफल कमीशनिंग तथा परंपरागत सिगनलिंग के स्थान पर आधुनिक मल्टी सेक्शन डिजिटल एक्सल काउंटर (MSDAC) प्रणालियों के प्रतिस्थापन को कई खंडों में लक्ष्य तिथियों से पूर्व पूर्ण करने के लिए सम्मानित किया गया। उनके इस कार्य से परियोजना निष्पादन में नए मानदंड स्थापित हुए तथा रेल परिचालन की सुरक्षा एवं दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

उप मुख्य इंजीनियर (सर्वे एवं निर्माण) श्री चिराग मित्तल को रिकॉर्ड समय-सीमा में प्रमुख सिविल इंजीनियरिंग कार्यों के पूर्ण होने में उनकी उत्कृष्ट भूमिका के लिए सम्मानित किया गया। इनमें दोहरीकरण खंडों का कमीशनिंग, महत्वपूर्ण पुलों का निर्माण, स्टेशन पुनर्विकास कार्य तथा साइडिंग परियोजनाएँ शामिल हैं, जिनसे अवसंरचना क्षमता, यात्री सुविधाओं एवं परिचालन दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

राजकोट मंडल के लोको पायलट गुड्स (इलेक्ट्रिकल) श्री रामप्रबेश कुमार को ट्रेन परिचालन के दौरान उनकी असाधारण सतर्कता एवं सूझबूझ के लिए सम्मानित किया गया। उन्होंने समय रहते एक वैगन के ढक्कन के ठीक से बंद न होने की स्थिति का पता लगाया, जिससे आग से संबंधित घटना की संभावना उत्पन्न हो सकती थी। उन्होंने तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई की और उनके समय पर किए गए हस्तक्षेप से एक संभावित अग्नि दुर्घटना टल गई।

भावनगर मंडल के प्वाइंट्समैन–बी श्री योगेशकुमार शर्मा को उनके अनुकरणीय अनुशासन, समयपालनता तथा परिचालन एवं सुरक्षा निर्देशों के कठोर अनुपालन के लिए सम्मानित किया गया। उनकी निरंतर सतर्कता एवं सक्रिय दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप संभावित असुरक्षित परिस्थितियों का समय रहते पता लगाया गया और उन्हें रोका गया, जिसमें गुज़रती हुई ट्रेन के ढीले ब्रेक घटकों को सुरक्षित करना भी शामिल है। इससे उनके कार्य क्षेत्र में ट्रेनों का सुरक्षित एवं दुर्घटनारहित परिचालन सुनिश्चित हुआ।

रेल सप्ताह की अनेक शील्डों तथा प्रतिष्ठित व्यक्तिगत पुरस्कारों की प्राप्ति में पश्चिम रेलवे का उत्कृष्ट प्रदर्शन उसके अधिकारियों एवं कर्मचारियों की निष्ठा, पेशेवर दक्षता तथा टीम भावना का सशक्त प्रमाण है। ये उपलब्धियाँ सुरक्षा, सेवा उत्कृष्टता, नवाचार एवं अवसंरचना विकास के प्रति पश्चिम रेलवे की अटूट प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करती हैं तथा भारतीय रेल को एक आधुनिक, दक्ष एवं यात्री-केंद्रित राष्ट्रीय परिवहन व्यवस्था के रूप में विकसित करने के व्यापक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व

'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' में सोमनाथ, सागर व संगीत के त्रिवेणी संगम में भक्ति के रंग में रंगे श्रद्धालु

कीर्ति-करसन सागठिया तथा हार्दिक दवे के मधुर सुरों से भरा आनंदमय वातावरण तथा राजभा गढवी के साहित्य से देशभक्ति और शिवभक्ति का अनोखा माहौल स्थापित हुआ

गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व अंतर्गत मंदिर परिसर में प्रतिदिन रात को आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में 9 जनवरी की रात सागर, सोमनाथ तथा संगीत का एक अनोखा एवं अलौकिक समन्वय स्थापित हुआ । सागर की लहरों की गर्जना, सोमनाथ महादेव की पावन उपस्थिति और संगीत की मधुर सुर लहरों ने पूरे परिसर को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ऊर्जा से भर दिया । इस भव्य सांस्कृतिक संध्या में प्रसिद्ध गायक कीर्ति सागठिया तथा लोकप्रिय लोक गायक करसन सागठिया की जोड़ी ने महादेव के भावपूर्ण भजन, विभिन्न गरबा और लोकप्रिय गीतों की मनमोहक प्रस्तुति दी। संगीत की ताल पर श्रोता झूम उठे और प्रत्येक रचना ने भक्ति, संस्कृति और लोक भावनाओं का संगम रचा। साथ ही कलाकार हार्दिक दवे ने शिव स्तुति, शिव भजन और पानबाई के भजनों की रौनक जमा दी, जिसमें एकतारा के सुरों ने अलग ही भक्तिमय वातावरण निर्मित किया। कार्यक्रम के अंत में प्रसिद्ध लोक साहित्यकार राजभा गढवी ने लोक साहित्य के विविध रसों की शैली में प्रस्तुति दी, जिसे उपस्थित सभी ने भरपूर आनंद लिया । राजभा गढवी ने सोमनाथ के ऐतिहासिक प्रसंगों का वर्णन किया, जिससे वातावरण में शिवभक्ति और देशभक्ति का अद्भुत संयोजन देखने को मिला।

सोमनाथ मंदिर परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान यात्रियों और स्थानीय नागरिकों ने एक अलौकिक अनुभूति के अनुभव का आनंद किया। संगीत की सुरों की लहरें सागर की लहरों में गूंज उठीं और सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के उत्सव को और अधिक गौरवपूर्ण एवं स्मरणीय बना दिया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से गुजरात की लोकसंस्कृति, आध्यात्मिक परंपरा और सांस्कृतिक विरासत का सुंदर प्रस्तुतीकरण हुआ। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, डॉ. प्रदुमनभाई वाजा, सांसद श्री राजेशभाई चूडासमा, विधायक श्री भगवानभाई बारड, अग्रणी श्री शिवाभाई सोलंकी व बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का केशोद एयरपोर्ट पर भावपूर्ण स्वागत : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व में होंगे सहभागी

गांधीनगर। सोमनाथ में आयोजित होने वाले ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व से जुड़े स्वाभिमान पर्व में सहभागी होने के लिए पहुंचे मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का शनिवार को जूनागढ़ जिले के केशोद एयरपोर्ट पर अत्यंत भावपूर्ण और उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री के साथ उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी का भी आगमन हुआ, जिनका भी जिले के जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों और स्थानीय नेताओं द्वारा गर्मजोशी के साथ अभिनंदन किया गया।

केशोद एयरपोर्ट पर पहुंचते ही मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी का स्वागत पूरे आत्मीय भाव और गरिमामय वातावरण में किया गया। स्वागत समारोह में जनप्रतिनिधियों के साथ-साथ प्रशासनिक अमले की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। एयरपोर्ट परिसर में उत्साह का माहौल था और सभी ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व को लेकर अपनी प्रसन्नता और गर्व व्यक्त किया।

इस अवसर पर जिला पंचायत के अध्यक्ष श्री हरेशभाई ठुमर ने मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह गुजरात की गौरवशाली संस्कृति, इतिहास और आत्मसम्मान का भी उत्सव है। उन्होंने मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश के विकास और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

विधायक श्री देवाभाई मालम और श्री भगवानजीभाई करगटिया ने भी मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री का अभिनंदन करते हुए कहा कि सोमनाथ जैसी पवित्र भूमि पर आयोजित होने वाला यह पर्व समाज में एकता, स्वाभिमान और राष्ट्रभावना को मजबूत करने का कार्य करेगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री की उपस्थिति से इस आयोजन को विशेष गरिमा प्राप्त होगी।

जिला कलेक्टर श्री अनिलकुमार रणावसिया ने प्रशासन की ओर से मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए बताया कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व को लेकर जिला प्रशासन द्वारा सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। सुरक्षा, यातायात, स्वच्छता और व्यवस्थाओं को लेकर विशेष सतर्कता बरती गई है, ताकि कार्यक्रम सुचारू रूप से और सफलतापूर्वक संपन्न हो सके।

इस स्वागत अवसर पर जिला विकास अधिकारी श्री एच. पी. पटेल, पुलिस अधीक्षक श्री सुबोध ओडेदरा, सहायक कलेक्टर सुश्री वंदना मीणा, केशोद नगरपालिका के अध्यक्ष श्री मेहुलभाई गोंडलिया, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री चंदुभाई मकवाणा, सावज डेरी के चेयरमैन श्री दिनेशभाई खटारिया सहित अनेक पदाधिकारी, अधिकारी और स्थानीय गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। सभी ने मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री का पुष्पगुच्छ भेंट कर और शुभकामनाएं देकर स्वागत किया।